मयखाना

میخانہ

ترجمان: شانتی لعل لکشمی چند جی برلوٹا
پاگل جالنوی



अनुवाद
शांतीलाल लक्ष्मीचंदजी बरलोटा (पागल)
जालना (महाराष्ट्र)

میخانہ

شانتی لعل برلوٹہ 'پاگل'

❖ زیرِ اہتمام ❖

انجمن پاسبانِ ادب جالنہ

F - 539

मयख़ाना

शांतीलाल बरलोटा 'पागल'

ज़ेरे एहतमाम

अंजुमन पासबाने अदब जालना

रजि. F - 539

❖ मयख़ाना ❖

बच्चन की मधुशाला को,
पढ़ बस मैंने इतना जाना,

एक यहाँ पर मैं पागल हूँ,

एक है बच्चन मस्ताना।

मैनै लफ्ज़ बदलना चाहा,

लेकिन क्या क्या बदल गया,

आज रश्क से देख रही है,

मधुशाला भी मयख़ाना।

मूल रचना - हरिवंशराय बच्चन (मधुशाला)
अनुवाद - शांतिलाल बरलोटा ''पागल'' (मयखाना)



श्री शांतीलालजी बरलोटा 'पागल' पिछले ३० वर्षोसे मेरे मित्र और स्नेही रहे हैं। कई बार उनके साथ मुशायरों और कवीसम्मेलनों में भाग लेने का मौका मिला। अपना कारोबार सम्हालते हुए यह 'पागल' महाशय कविता, शायरी करते हैं, साहित्यकी सेवा करते हैं यह सराहनीय है। उनकी रचनाएं सशक्त होती हैं। कभी मन को सुकून देती हैं तो कभी मन को झिंझोड कर रख देती हैं। 'पागल' कभी निसर्ग में खोजाते हैं तो कभी ज़िंदगी के रंगीन सपनों में खोजाते हैं। कभी कवी कल्पनाओं का बयान करते हैं तो कभी वास्तविक जीवन के दहकते अंगारे सुननेवालों की हथेलियोंपर रख देते हैं। हरिवंशरायजी बच्चन की 'मधुशाला' साहित्य में रूचि रखनेवाले हर व्यक्ति को प्रभावित करती है, और यही मेरे साथ भी हुआ। हरिवंशरायजी की 'मधुशाला' जीवन रूपी पुष्प के मधु का अर्थात आनंद का सेवन करने का संकेत देती है। यहां मयखाना साक़ी और मयख्वार एक प्रतिक के रूप में हैं। ज़िंदगी का लुत्फ उठाना हो तो इसे तन्मय होकर, आसक्तीसे और रसिक बन कर जीना चाहिए। जिसतरह एक भंवरा कमल की ओर खिंचा चला जाता है उसी लगन से हमारा मन ज़िंदगी की तरफ आकृष्ट हो तभी ज़िंदगी का आनंद हम उठा पाएंगे। जीवन का ध्येय और मकसद ही आनंद है, खुशी है। इस आनंद की इस खुशी की खोज ही मधुशाला की प्रेरणा है। इस खोज में निकला कवी कभी शब्दों का मयखाना खोल कर रख देता है तो कभी खुद साक़ी बन कर शायरी की शराब या मय पढनेवालों को पिलाता है। कभी निसर्ग साक़ी बनकर अपने निसर्ग सौंदर्य की शराब पिलाता है तो कभी निसर्ग का वर्णन मानों वेद की ऋचाएं हैं इस बात का एहसास दिलाता है।

कई बरस पहले शांतीलालजी और मैं 'मधुशाला' पर चर्चा कर रहे थे। बातों ही बातों में मैने सहजरूप से कह दिया कि मधुशाला का उर्दू अनुवाद होना चाहिए। उर्दू शायरी में शराब और शबाब का वर्णन बडे पैमाने पर आता है। मधुशाला मे शराब और शबाब को बच्चनजी ने एक नया रूप दिया है, इसलिये इसका उर्दू अनुवाद मैंने ज़रूरी समझा। शांतीलालजी ने इस प्रस्ताव को गंभीरता से लिया और इस कार्य में अपने आप को झोंक दिया। उनकी इसी मेहनत और लगन का नतीजा है कि 'मधुशाला' का उर्दू अनुवाद 'मयखाना' हमारे सामने हैं। इस अनुवाद के लिये मैं उन्हे बधाई देता हूं। 'मधुशाला' में बच्चनजी की जो भावनांए थीं वही भावनांए 'मयखाना' में पूरी तरह से उतारने पर मैं शांतीलालजी का अभिनंदन करता हूं।

इस अनुवाद को प्रकाशीत करने के लिये श्री अमिताभजी बच्चन से सम्मति मांगी गई हैं।

अंत में यही कहना चाहूंगा कि शांतीलालजी बरलोटा 'पागल' का यह मयखाना आपको भी सुरूर दिलाने मे कामियाब होगा इस शुभेच्छाओं के साथ

सुरेश अग्रवाल

सुरेश ओंकार दासजी अग्रवाल

मुख्य कार्यकारी संचालक बेजो शितला सीड्स प्रा. लि. जालना.



इज़हारे तशक्कुर

पहले भगवान का शुक्र अदा क़रने के बाद में आप क़ारयीन हजरात से मुख़ातिब हूं के मयखाना के साक़ी जनाब सुरेश कुमारजी अग्रवाल है जिनके कहने पर मैंने १९७६ में 'मधुशाला' का तरजुमा उर्दू में किया हूं लैकिन हालात की मजबूरी से वक्त नहीं मिल पाया इसी वजह से आज छपने जा रहा है।

बच्चन जी की 'मधुशाला' का तरजुमा कई ज़बानों में किया गया। 'मधुशाला' का तरजुमा अंग्रेज़ी में 'द हाऊस ऑफ वाईन' (मार्जरी बोल्टन और राम स्वरूप व्यास) ने अंग्रेज़ी तरजुमा किया हैं। मराठी तरजुमा किया है, विनय कुमार चौकसे इस के बाद फिर मराठी में तरजुमा किया हैं श.प.जोशी, तारा भवालकर और कैलास भवानी ने भी मराठी में तरजुमा किया हैं। कन्हैयालाल घोष ने बांगला ज़बान में तरजुमा किया है। और मलियालम में-तरजुमा किया हैं भट्टतिरी ने। अब मैं मेरी कोशिश में कहां तक कामयाब हुआ हूं। ये आप ख़ारईन हजरात के हाथों में हैं। इस 'मयख़ाना' लिखने में मुझे जो जद्दोजहद का सामना करना पडा, इस में मेरे मुखलीस दोस्तो का बहोत बडा साथ है। जिनके असमाय गिरामी हैं। जनाब उस्ताद मोहतर्रम नज़र जालनवी (मरहूम) जनाब रामकृष्णजी शोला (मरहुम), जनाब हजरत मासुम जालनवी (मरहुम), जनाब सत्यभूषन अवस्थी (मा. तहसीलदार जालना), जनाब अनवर जालनवी, जनाब शमीम जोहर, जनाब शेख मोहम्मद अल्ताफ़ (प्रो. भारत ईंजनियरींग वर्क्स, जालना), और मैं बहोत बहोत शुक्र गुज़ार हूं लोकमत के पत्रकार श्री. वसंत वासुंदेकर साहब का जिन्होंने ३० जुलै २००३ को लोकमत के पहले पेज पर मेरा परिचय छपवा कर लिखा है के अब ये 'मयख़ाना' उर्दू में छप कर आ जल्द हि रहा है। १८ अगस्त २००३ से रोज़ाना हॅलो जालना लोकमत में एक बंद छप रहा हैं।

आपका

शांतीलाल लक्ष्मीचंदजी बरलोटा ('पागल' जालनवी)

महावीर चौक, जालना



شانتی لال جی برلوٹا (پاگل) پیچھلے ۳۰ سال سے میرے دوست اور قریبی رہیں ہے کئی بار اُنکے ساتھ مشاعروں اور کوی سمیلنوں میں بھاگ لینے کا موقع ملا اپنا کاروبار سنبھالتے ہوئے 'پاگل' مہاشیئے کویتا شاعری کرتے ہیں ساہتیہ کی سیوا کرتے ہیں یہ سرہانیہ ہیں اُنکی رچنائیں سشکت ہوتی ہیں کبھی من کو سکون دیتی ہے تو کبھی من کو جھنجھوڑ کر رکھ دیتی ہیں 'پاگل' کبھی نسرگ میں کھوجتے ہیں تو کبھی زندگی کے رنگین سپنوں میں ڈوب جاتے ہیں کوی کلپناؤ کا بیان کرتے ہیں تو کبھی واستویک جیون کے دہکتے انگاریُسن نے والو کی ہتھیلیوں پر رکھ دیتے ہیں

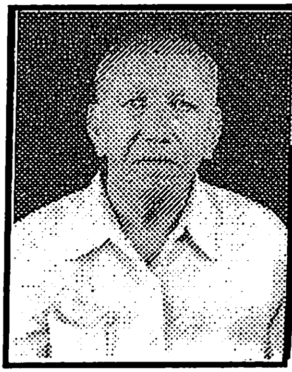
ہری ونش رائے بچن کی 'مدھوشالہ' ساہتیہ میں روچی رکھنے والے ہر ویکتی کو پربھاویت کرتے ہیں اور یہی میرے ساتھ بھی ہوا ہری ونش رائے بچن جی کی 'مدھوشالہ' جیون روپی پشپ کے مدھو کا ارتھت آنند کا سیون کرنے کا سنکیت دیتی ہے یہ میخانہ ساقی اور میخوار ایک پرتیک کے روپ میں ہے زندگی کا لطف اُٹھانہ ہو تو اس تنمیہ ہو کر آسکتی ہے اور رسیک بن کر جینا چاہیے جسطرح ایک بھورا کمل کی اور کھینچا چلا جاتا ہے اُس لگن سے ہمارا من زندگی کی طرف اکوشٹ ہو تبھی زندگی کا آنند ہم لوٹ پائیگے جیون کا دھئے اور مقصد ہی خوشی ہیکھوج ہی مدھوشالہ کی پریرنا ہیں اس کھوج میں نکلا کوی کبھی شبدوں کا میخانہ کھول کر رکھ دیتا ہے تو کبھی خود ساقی بن کر شاعری کی شراب یہمئے پینے والوں کو پلاتا ہیں کبھی نسرگ ساقی بن کر اپنے نسرگ سوندریہ کی شراب پلاتا ہے تو کبھی نسرگ کا ورنن مانو وندکی رچائیں ہیں اس بات کا احساس دیلاتا ہیں۔

کئی روز پہلے شانتی لال جی اور میں مدھوشالہ پر چرچہ کر رہے تھے باتو ہی باتو میں میں نے سہاج روپ سے کہہ دیا کی مدھوشالہ کا اُردو انواد ہونا چاہیے! اُردو شاعری میں شراب اور شباب کا ورنن بڑے پیانہ پر آتا ہیں مدھوشالہ میں شراب اور شباب کو بچن جی نے نیا روپ دیا ہے اسلیے اسکا اُردو انواد میں نے ضروری سمجھا شانتی لال جی نے اس پرستاؤ کو گنبھیرتا سے لیا اور اس کاریہ میں اپنے آپ کو جھونک دیا اُنکی اسی محنت اور لگن کا نتیجہ ہیں کی 'مدھوشالہ' کا اُردو انواد میخانہ ہمارے سامنے ہیں اس انواد کے لیے میں اُنہیں بدھائی دیتا ہوں 'مدھوشالہ' میں ایتاب بچن جی کی جو بھانائے تھی وہی بھانائے میخانہ میں پوری طرح سے اُتارنے پر میں شانتی لال جی کا ابھینندن کرتا ہو اس انواد کو پرکاشیت کرنے کے لیے شری ایتاب جی بچن سے انومتی مانگی گئی ہیں انت میں یہی کہنا چاہوں گا کی شانتی لال جی برلوٹا (پاگل) کا یہ میخانہ آپ کو بھی سرور دلانے میں کامیاب ہوگا ان شوبھ اِچھاؤ کے ساتھ۔

سوریش اُنکار داس جی اگروال

مکھیئے کاریہ کاری سنچالک بے جو شیتل سیڈس پرائیوٹ لمیٹیڈ جالنہ۔

اظہار تشکر



پہلے بھگوان کا شکر ادا کرنے کے بعد میں آپ قارئین حضرات سے مُخاطب ہوں کہ اِس میخانہ کے ساقی جناب سُریش کُمار جی اگروال ہیں جن کے کہنے پر میں نے ۱۹۷۶ میں مدھوشالہ کا ترجمہ اُردو میں کیا ہوں لیکن حالات کی مجبوری سے۔ وقت نہیں مل پایا اسی وجہہ سے آج شائع ہونے جارہا ہے

بچّن جی کی مدھوشالہ کا

ترجمہ کئی زبانوں میں کیا گیا مدھوشالہ کا ترجمہ انگریزی میں ہاؤس آف وہائن۔ مارجری بولٹن اور رام سروپ ویاس نے انگریزی ترجمہ کیا۔ مراہٹی ترجمہ کیا ہے ونئے کُمار چوکسے اس کے بعد پھر مراہٹی میں ترجمہ کیا ہے تارا بھوالکر نے بعد میں بنگلہ زبان میں ترجمہ کیا ہے کنہیا لعل گھوش نے ملیالم میں ترجمہ کیا ہے بھٹ لیری نے بھی مراٹھی میں ترجمہ کیا ہے اب میں اپنی کوشش میں کہاں تک کامیاب ہُوا ہوں یہ آپ قارئین حضرات کے ہاتھوں میں ہے اس میخانہ لکھنے میں مُجھے جو جدوجہد کا سامنا کرنا پڑا اس میں میرے مُخلص دوستوں کا بہت بڑا ساتھ ہے جن کے اسماء گرامی ہیں۔ جناب اُستاد محترم نظر جالنوی مرحوم جناب رام کرشن شعلہ جی۔ مرحوم جناب حضرت معصوم جالنوی مرحوم جناب ستیہ بھوشن اوسٹھ سابق تحصیلدار جالنوی جناب انور جالنوی جناب شمیم جوہر۔ جناب شیخ محمد الطاف صاحب پروپرائٹیر بھارت انجنیرنگ ورکس جالنہ اور میں بہت بہت شکر گذار ہوں لوکمت کے پتر کار شری وسنت واسندے کر صاحب کا جنھوں نے ۳۰ جولائی ۲۰۰۳ کو لوکمت کے صفحہ اول پر میرا تعارف چھپوا کر لکھا ہے کہ اب یہہ میخانہ اُردو میں چھپ کر آرہا ہے ۱۸ راگست ۲۰۰۳ سے روزانہ ہلو جالنہ لوکمت میں چھپ رہا ہے

(۱)

نازک نازک انگوروں کی مَئے کا بھر کر پیمانہ
دلبر اپنے ہی ہاتھوں سے مَئے ہے تجھ کو پلوانا
پہلے تبرّک تیرا ہوگا بعد میں دنیا چکھ لیگی
تیرے دستِ ناز سے اپنا شروع کروں گا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖❖

(۲)

تشنہ لبی گر تیری ہے تو عالم کی مَۓ کھنچوانا
رقص کرونگا ایک پاؤں پر لے کر مۓ کا پیمانہ
اپنے وجودِ خاکی کو میں تم پہ تصدّق کردونگا
آج کروں قربان تمہیں پر دو عالم کا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖❖

(۳)

جانِ جاں ہے میری مۓ تو میں ہوں تشنہ پیمانہ
اپنے میں تو مجھے سمو کر مست بنا ہے دیوانہ
پی کے تجھے جی بھر کر چھلکا مجھے تو پی کر مست بنا
ایک دوسرے کی خاطر اب ایک جان ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖❖

(१)

नाज़ुक - नाज़ुक अंगूरो की, [१]मय का भर कर पैमाना,
दिलबर[२]अपने ही हाथों से, मय है तुझको पिलवाना;
पहले तब्बरुक[३] तेरा होगा, बाद में दुनियाँ चख लेगी,
तेरे दस्तेनाज़[४] से अपना शुरू करूंगा मयख़ाना।

(२)

तिश्नालबी[५]गर तेरी है तो, आलम[६] की मय खिंचवाना,
रक़्स[७] करूंगा एक पाँव पर, ले कर मय का पैमाना;
अपने वजूदेखाकी[८] को मैं, तुम पे तसद्दुक[९] कर दूँगा,
आज करूँ कुर्बान तुम्हीं पर, दो आलम का मयख़ाना।

(३)

जानेजाँ है मेरी मय तैं हूँ तिश्ना पैमाना,
अपने में तु मुझे समोकर, मस्त बना है दीवाना,
पी के तुझे जी भर कर छलका मुझे तू पी कर मस्त बना,
एक -दूसरे की ख़ातिर अब, एक - जान है मयख़ाना।

१ शराब २ प्रेमिका ३ प्रसाद ४ अदा भरे नाजुक हाथ ५ होंठो की प्यास ६ दुनियाँ ७ नाच ८ मिट्टी की माया ९ निछावर

(۴)

جذبۂ دل انگور بیل سے مئے تخیل کھنچوانا
شاعر بن کر ساقی آیا بھر کے سخن کا پیمانہ
لاکھوں میخواروں سے اسکی ایک بوند کیا کم ہوگی
سخن فہم میخوار بنیں گے میری شاعری میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۵)

شیریں جذبۂ دل کی شیریں روز ڈھلے مئے مستانہ
اُس مئے سے بھرتے جاتا ہوں ہستی کا میں پیمانہ
دستِ تصور اپنے بڑھا کر اُٹھا اُسے خود پی جاتا
میں خود ساقی پیمانہ مئے میں خود میکش میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(٦)

میخانہ جانے کو گھر سے رِند چلا ہے دیوانہ
مشکل ہے کس راہ چلوں میں سوچ رہا ہے انجانہ
رہبر الگ بتاتے رستے میری رہبری ایسی ہے
آنکھ بند کر چلتا جا تو تجھے ملیگا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(४)

जज़्बयेदिल[१] अंगूर बेल से मयेतख़युल[२] खिंचवाना,
शायर बन कर साक़ी[३] आया, भर के सुख़न[४] का पैमाना;
लाखों मयख़्वारो[५] से इसकी, एक बूंद क्या कम होगी?
सुख़नफहम[६] मयख़्वार[७] बनेंगे मेरी शायरी मयख़ाना।

(५)

शीरीं[८] जज़्बयेदिल[९] की शीरीं रोज ढले मय मस्ताना,
उस मय से भरते जाता हूँ हस्ती[१०] का मैं पैमाना;
दस्ते तसव्वुर[११] अपने बढाकर उठा उसे ख़ुद पीजाता,
मैं खुद साक़ी पैमाना मय मैं ख़ुद मयकश मयख़ाना।

(६)

मयख़ाना जाने को घर से, रिंद[१२] चला है दीवाना,
मुशकिल है किस राह चलूँ मैं, सोच रहा है अनजाना;
रहबर[१३] अलग बताते रस्ते, मेरी रहबरी ऐसी है,
आँख बंदकर चलता जा तू, तुझे मिलेगा मयख़ाना।

१ दिल की भावना २ कल्पना की शराब ३ शराब देनेवाली
४ कविता ५ शराबीयों ६ कविता समझनेवाले ७ शराबी
८ मिठी ९ मन की कल्पना १० आत्मा ११ कल्पना के हाथ
१२ शराबी १३ राह दिखानेवाला

(۷)

عُمر گذاری چلتے چلتے صد افسوس ہے پھر جانا
دُشواری ہے دور ہے منزل ہر رہبر کا بتلانا
نہیں جسارت آگے بڑھوں میں نہیں حوصلہ پیچھے ہٹوں
محو حیرت مجھے بنا کر دیکھ رہا ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(۸)

مُنہ سے ہر دم بول دیوانے شریں بادہ مَستانہ
حُسنِ تخیل کا ہاتھوں میں حاصل کر لے پیمانہ
یا د تو ہر دم رکھنا دل میں. اُس فردوسی ساقی کی
صبر سے اپنے کام لے راہی دور نہیں ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(۹)

تِری میکشی تیری خاطر بنتی صہبا مستانہ
تیرے لبوں کی تشنہ لبی سے پیدا ہوگا پیمانہ
کرتے کرتے جب کہ تصّور ساقی کا بننا دلبر
رہے نہ ساقی جام و صُراحی مل کے رہیگا میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(७)

उम्र गुजारी चलते चलते , सद अफ़सोस है फिर जाना,
दुश्वारी है दूर है मंज़िल, हर रहबर का बतलाना;
नहीं जसारत[१] आगे बढूं मैं, नही हौसला पिछे हटूँ,
महवेहैरत[२] मुझे बना कर, देख रहा है मयख़ाना।

(८)

मुँह से हरदम बोल दीवाने शीरींबादा[३] मस्ताना,
हुस्ने तख़य्युल[४] का हाथों में ,हासिल कर ले पैमाना;
याद तु हरदम रखना दिल में, उस फ़िरदौसी[५] साक़ी की,
सब्र से अपने काम ले राही, दूर नहीं है मयख़ाना।

(९)

तिरी मयक़शी तेरी ख़ातिर ,बनती सहेबा[६] मस्ताना,
तेरे लबों की तिश्नालबी से, पैदा होगा पैमाना;
करते करते जब के तस्सव्वुर[७], साक़ी का बनना दिलबर,
रहे ना साक़ी जामो सुराही, मिल के रहेगा मयख़ाना।

१ साहस २ हक्काबक्का ३ मिठी शराब ४ सुंदर विचार
५ स्वर्ग में रहनेवाली ६ शराब ७ कल्पना

(۱۰)

دیکھا مینا سے ساغر میں گرتی مئے کا اٹھلانا
دیکھا مئے دیتے ساقی کو ناز سے اُسکا بل کھانا
پہنچ گئے بس آس پاس ہے کیا چلنا دو گام کا بھی
دیکھ کے میکش کہتے ہیں اب آگے بڑھے خود میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۱۱)

چھڑے جل ترنگ بوسہ لے جب پیمانے سے پیمانہ
سازوں کی جھنکار پہ چلتا ساقی ہو کے مستانہ
بادہ فروشوں کی جھڑکی آواز بنے ہے سازوں کی
مےَ میں سے رندوں [illegible] کی ہوتا اور دوبالا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۱۲)

دستِ ناز کو رنگِ حنا سے سجا کے لانا پیمانہ
بادِ صبا مدمست بناتے ساقی تیرا اِٹھلانا
جیسی طلب ویسا نظارہ بادہ کشوں کی محفل میں
قوس وقزح سے شرط لگاتا آج انوکھا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(१०)

देखा मीना से साग़र[१] में, गिरती मय का इठलाना,
देखा मय देते साक़ी को, नाज़ से उसका बलखाना;
पहूँच गये बस आस पास है, क्या चलना दो गाम[२] का भी,
देख के मयकश कहते हैं, अब आगे बढे ख़ुद मयख़ाना।

(११)

छिडे जलतरंग बोसा ले जब, पैमाने से पैमाना,
साज़ों[३] की झनकार पे चलता, साक़ी हो के मस्ताना;
बादा फ़रोशी की झिडकी आवाज़ बने हैं साज़ों की,
मैं [redacted] मैं से रिंदो की होता और दोबाला[४] मयख़ाना।

(१२)

दस्ते नाज़कों[५] रंगे हिना[६] से सजा के लाना पैमाना,
बादेसबा[७] मदमस्त बनाते, साक़ी तेरा इठलाना;
जैसी तलब, वैसा नज़ारा, बदाकशों की महफ़िल में,
क़ौसोक़ज़ा[८] से शर्त लगाता, आज अनोखा मयख़ाना।

१ प्याला २ दोपाँव ३ संगीत ४ दुगना ५ अदाभरे हाथ
६ मेहंदी का रंग ७ नशीली हवा ८ इंद्रधनुष्य

(۱۳)

دست طلب میں آتے آتے ناز کرے گا پیمانہ
ہونٹوں پہ آنے سے اوّل صہبا کا وہ تڑپانا
حیلے بہانے لاکھوں کریگا پیر مُغاں پہلے پہلے
بادہ کشوں مایوس نہ ہونا روٹھے اگر یہ میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۱۴)

مئے ارغواں ہے یہ مچلتی نہیں مار کا بل کھانا
اسے نہ کہنا آبلہ دل کا ہے صہبا کا اِٹھلانا
رنج والم صہبا کی مستی پیر مُغاں یادِ ماضی
جِس کوسکوں ہودل کی تڑپ میں اُسکے لیئے ہے میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۱۵)

عالم کی ٹھنڈی صہبا سی نہیں یہ صہبا مستانہ
عالم کے ٹھنڈے ساغر سا ہمدم نہیں یہ پیمانہ
مئے آتشیں اس ساغر میں شعر غمزدہ ہیں دل کے
نہیں خوف جن کو جلنے کا اُن کے لئے ہے میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(१३)

दस्ते तलब में आते आते, नाज़ करेगा पैमाना,
होंठो पर आने से अव्वल, सैहबा का वो तड़पाना;
हिले बहाने लाखों करेगा, पीरेमुग़ाँ [१] पहले पहले,
बादाकशों [२] मायूस न होना, रूठे अगर ये मयख़ाना।

(१४)

मये अरगवां [३] है मचलती, नहीं मार [४] का बलखाना,
इसे न कहना आबला [५] दिल का, है सैहबा का इठलाना;
रंजो अलम सैहबा की मस्ती, पीरेमुग़ाँ यादेमाज़ी [६],
जिसको सुकुँ [७] हो दिल की तडप में, उसके लिये है मयख़ाना।

(१५)

आलम [८] की ठंडी सैहबा सी, नहीं ये सैहबा मस्ताना,
आलम के ठंडे साग़र सा, हमदम नहीं ये पैमाना;
मये आ़तिशीं [९] इस साग़र में, शेर ग़मज़दा है दिल के,
नहीं ख़ौफ जिनको जलने का, उन के लिये है मयख़ाना।

१ शराब पिलाने वाला २ शराबी ३ लाल रंग की शराब ४ सांप
५ छाला ६) गुजरी हुईयाद ७ शांती ८ दुनियाँ
९ ज्वाला भरी शराब

(۱٦)

رواں دواں مئے دیکھی دیکھو مئے کا شعلے بھڑکانا
دیکھو ساغر کو چھوتے ہی ہائے لبوں کا جل جانا
جسم لبوں کے ساتھ جلے پر پینے کو دو گھونٹ ملے
ایسے بادہ نوشوں کو تو آج بُلانا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۷)

مذہب کی کچی دیواریں توڑ چُکا جو دیوانہ
دیر و حرم کا نام یہاں پر بُھلا چُکا جو مستانہ
شیخ و برہمن کی چالوں سے بچ کر جو ہے نکل آیا
استقبال کریگا اُس کا آج یہ میرا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۸)

دیکھ کے مستی کی مئے کو بیتاب لبوں کا تھرآنا
فرطِ خوشی کے لرزاں ہاتھوں جس نے چھوا نہ پیمانہ
دستِ ساقی تھام کے جِس نے نہیں بٹھایا پہلو میں
بلا وجہہ برباد کیا ہے ہستی کا یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(१६)

रवाँ दवाँ[१] मय देखी देखो, मय का शोले भडकाना,
देखो साग़र को छूते ही, हाय लबों का जल जाना;
जिस्म लबों के साथ जले पर, पीने को दो घूंट मिले,
ऐसे बादानोशों[२] को तो, आज बुलाता मयख़ाना।

(१७)

मज़हब की कच्ची दीवारें, तोड चुका जो दीवाना,
दैरोहरम[३] का नाम यहाँ पर, भुला चुका जो मस्ताना;
शेख़ो बिरेहमन की चालों से, बचकर जो है निकल आया,
इस्तक़बाल[४] करेगा उसका, आज ये मेरा मयख़ाना।

(१८)

देख के मस्ती की मय को, बेताब लबों का थर्राना,
फ़र्तेख़ुशी[५] के लरज़ाँ[६] हाथों, जिसने छुआ ना पैमाना;
दस्ते साक़ी थाम के जिसने, नहीं बिठाया पहलू[७] में,
बिलावजह बरबाद किया है, हस्ती का ये मयख़ाना।

१) बहती हुई २) शराब पिनेवाला ३) मंदीर मस्जीद ४) स्वागत
५) दिल को खुशी ६) कांपते ७) पासमें

(۱۹)

عابد صادق بنے یہ ساقی آبِ مُقدس مستانہ
مالا بناکر پیمانوں کی رہے پھیرتا دیوانہ
اور لئے جا اور پیے جا یہ کلمہ پڑھتا جائے
شکل خُدا بن کر میں بیٹھوں دیرو حرم ہو میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۲۰)

نہیں بجے ناقوس دیر میں چڑھے نہ بُت پر نذرانہ
اپنے مکاں میں بیٹھا موذّن مسجد سے ہو انجانا
لُٹے شہنشاہوں کی دولت گرے محل کی دیواریں
رہے سلامت بادہ کش آباد رہیگا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۲۱)

مٹے قبیلے کئی مٹے یوں نام ونشاں ہی مٹ جانا
وہ محل بنے ویران ناچتی جِس جا ہردم رُخسانہ
ٹلے آسماں زمیں پہ آکر چاہے زمیں یہ پھٹ جائے
ڈٹے رہے میخوار رتجگا روز کرے گا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(१९)

आबिद[१] सादिक़ बने ये साक़ी, आबे मुक़द्दस[२] मस्ताना,
माला बनाकर पैमानों की, रहे फेरता दीवाना;
और लिये जा और पीये जा, ये कलमा[३] पढ़ताजाये,
शक्ले ख़ुदा बनकर मैं बैठुँ, दैरोहरम हो मयख़ाना।

(२०)

नहीं बजे नाक़ूस[४] दैर में, चढ़े ना बुतपर नज़राना,
अपने मकाँ में बैठा मुअज़्ज़न[५], मस्ज़िद से हो अनजाना;
लूटे शहंशाहों की दौलत, गिरे महल की दीवारें,
रहे सलामत बादाकश, आबाद रहेगा मयख़ाना।

(२१)

मिटे क़बीले कई मिटे यों, नामो निशाँ ही मिट जाना,
वो महल बने वीरान नाचती, जिस जा हरदम रूख़साना[६];
टिके आसमाँ ज़मीं पे आकर, चाहे ज़मीं ये फट जाये,
डटे रहे मयख़्वार रतजगा, रोज़ करेगा मयख़ाना।

१) सच्चा पुजारी २) पवित्र जल ३) मंत्र ४) मंदीर का घंटा
५) अजान देने वाला ६) नर्तकी

(۲۲)

ساقی ملک الموت رہیگا باقی سب ہے مٹ جانا
خشک سبھی ہو عرق یہ قائم زہر اور یہ خُم خانہ
زور و شور اور سرگرمی کی جگہ سبھی ویران بنے
بیدار رہیگا ہر دم مرگھٹ کرے رتجگا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۲۳)

مانا گیا دُنیا میں اکثر بد صہبا کا پیمانہ
شوخ منچلا پیر مُغاں ہے بادہ کش ہے مستانہ
نہیں جمے گا میل یہاں پر میخانے سے دُنیا کا
حالِ خستہ روز ہے دنیا روز نیا ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۲۴)

مئے نوشی کے بِنا جو کہدے بُرا ہے یہ تو میخانہ
بادہ کشی کے بعد لگا مُنہ تالا بیٹھا فرزانہ
زاہد اور میخوار کے جھگڑے جیتے صہبا اور ساغر
زیرِ اثر دُنیا کو کرنے آیا جہاں میں میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(२२)

साक़ी मलीकुल[१] मौत रहेगा, बाकी सब है मिट जाना,
ख़ुश्क[२] सभी हो अर्क़[३] ये क़ायम, ज़हर और ये ख़ुमखाना;
ज़ोरो शोर और सर गर्मी की, जगह सभी विरान बने,
बेदार[४] रहेगा हरदम मरघट, करे रतजगा मयखाना।

(२३)

माना गया दुनियाँ में अक्सर, बदसैहबा[५] का पैमाना,
शैख[६] मनचला पीरेमुगाँ है, बादाकश है मस्ताना;
नहीं जमेगा मेल यहाँ पर, मयख़ाने से दुनियाँ का,
हाले ख़स्ता[७] रोज है दुनियाँ, रोज नया है मयख़ाना।

(२४)

मयनोशी के बिना जो कहदे, बुरा है ये तो मयख़ाना,
बादाकशी के बाद लगा मुँह, ताला बैठा फरज़ाना[८];
ज़ाहेद[९] और मयख़्वार के झगडे, जीते सैहबा और साग़र
ज़ेरेअसर[१०] दुनियाँ को करने, आया जहाँ में मयख़ाना।

१ यमराज २ सुखा हुआ ३ रस ४ जागता ५ बुरी शराब
६ चंचल ७ बुरा हाल ८ होशियार ९ उपदेशक १० प्रभावित

(۲۵)

پھلا پھُلا یہ رہے میکدہ چاہے جہاں ہو ویرانہ
وہاں پہ غم کی بدلی چھائے یہاں ناچتی رُخسانہ
جنت سے سیدھی اُتری مئے دُنیا کا غم کیا جانے
رہے غمزدہ سارا عالم عید منائے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۲۶)

ایک سال میں ایک بار ہی آتی ہولی ہے مانا
ایک بار ہی ضد ہوتی ہے جلتے چراغوں کی جانا
اہلِ جہاں اک روز میکدہ لیکن آکر تو دیکھو
دن کو ہولی رات دیوالی روز مناتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۲۷)

کون بشر ہے کس کو پتہ ہے رِند بنا ہے مستانہ
دودھ پلا پالا ساقی نے کون ہے اُس سے انجانہ
پاکے زندگی پیکر آدم مست رہے اس کارن ہی
جہاں میں آکے سب سے اوّل اُس نے پایا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(२५)

फला-फुला ये रहे मयकदा, चाहे जहाँ हो वीराना,
वहाँ पे ग़म की बदली छाये, यहाँ नाचती रूख़साना;
जन्नत से सीधी उतरी मय, दुनियाँ का ग़म क्या जाने,
रहे ग़मज़दा[१] सारा आलम[२], ईद मनाये मयख़ाना।

(२६)

एक साल में एक बार ही,आती होली है माना,
एक बार ही ज़िद होती है, जलते चिराग़ों की जाना;
अहलेजहाँ एक रोज़, मयकदा लेकिन आकर तो देखो,
दिन को होली रात दिवाली, रोज़ मनाता मयख़ाना।

(२७)

कौन बशर है, जिसको पता है, रिंद बना है मस्ताना
दूध पिला पाला साक़ी ने, कौन है उससे अनजाना,
पाके ज़िंदगी पैकरे आदम[३], मस्त रहे इस कारण ही,
जहाँ में आके सबसे अव्वल, उसने पाया मयख़ाना।

१ दुखी २ सारी दुनियाँ ३ मनुष्य जन्म

(۲۸)

رہے سلامت انگوری شئے جو دے صہبا مستانہ
رہے سلامت آب و گلِ بنتا ہے جس سے پیانہ
رہے سلامت تشنہ لبی سیراب نہیں ہونا جانے
رہے سلامت بادہ کش آباد رہے یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(۲۹)

شادماں ہوں شادماں گر رہتا ساقی مستانہ
بھلا بُرا کیا سمجھے گا جب مستی میں ہے دیوانہ
کوئی نہ پوچھے میری خیریت پوچھے بس میخانے کی
کہیں ملو آداب نہ کہنا کہنا سلامت میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(۳۰)

کرے فروشی مئے کی سورج آبِ بحر مئے مستانہ
پیرِ مغاں بادل بن آیا زمیں بنی ہے پیانہ
جھڑی لگا کر برسے صہبا ہلکی ہلکی بوچھاریں
ذرّہ ذرّہ بن میں پیوں موسم باراں میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(२८)

रहे सलामत अंगुरीशह[१], जो दे सहेबा मस्ताना,
रहे सलामत आबोगिल[२], बनता है जिससे पैमाना;
रहे सलामत तिश्नालबी, सैराब[३] नहीं होना जाने,
रहे सलामत बादाकश, आबाद रहे ये मयख़ाना।

(२९)

शादमान[४] हूँ शादमान गर, रहता साक़ी मस्ताना,
भला बुरा क्या समझेगा जब, मस्ती में है दीवाना;
कोई न पूछे मेरी ख़ैरियत, पूछे बस मयख़ाने की,
कहीं मिलो आदाब न कहना, कहना सलामत मयख़ाना।

(३०)

करे फ़रोशी[५] मय की सुरज, आबे बहर मय मस्ताना,
पीरेमुगाँ बादल बन आया, ज़मीं बनी है पैमाना;
झडी लगा कर बरसे सहेबा, हलकी हलकी बौछारे,
ज़र्रा ज़र्रा बन मैं पीऊँ मौसमें[६] बाराँ मयख़ाना।

१ अंगुर की चीज २ पानी और मिट्टी ३ तरोताज़ा ४ खुश
५ बिक्री ६ ठंडी हवा का मौसम

(۳۱)

گوہر ستاروں سجا فلک یہ بن جائے جب پیانہ
سیدھا کر اُس میں بھردینا آبِ رواں مئے مستانہ
نسیمِ صہبا بن کر ساقی چھلک لبوں پر جاتی ہے
ساحل دریا بن یہ پھیلے بنے یہ عالم میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۳۲)

کوئی لبوں پر شئے ہو لیکن زباں کہے مئے مستانہ
کچھ بھی دیدو ہاتھوں میں محسوس ہوا ہے پیانہ
ہر صورت میں پیرِ مُغاں کی شکل یہاں بن جاتی ہے
چاہے بینائی کچھ بھی دیکھے نظر میں رہتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۳۳)

پودے آج بنے ہیں ساقی لے کے گُلوں کا پیانہ
بھری ہوئی ہے جس کے اندر خوشبو لئے مئے مستانہ
مانگ مانگ کر مئے ارغواں بھنورے پیتے جاتے ہیں
جھوم رہے ہیں وجد میں آکر کیا ہے گُلستاں میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(३१)

गोहर[१] सितारों सजा फ़लक[२] ये, बन जाये जब पैमाना,
सीधा कर उसमें भर देना आबे रवाँ [३] मय मस्ताना;
नसीमे सैहबा[४] बनकर साक़ी, छलक लबो पर जाती है,
साहिल[५] दरिया बन ये फैले, बने ये आलम मयख़ाना।

(३२)

कोई लबों पर शह हो लेकिन, ज़ुबाँ कहे मय मस्ताना,
कुछ भी दे दो हाथों में, महसूस हुवा है पैमाना,
हर सूरत में पीरेमुग़ाँ की, शक्ल यहाँ बन जाती है,
चाहे बिनाई[६] कुछ भी देखे, नज़र में रहता मयख़ाना।

(३३)

पौदे आज बने हैं साक़ी, ले के गुलों का पैमाना,
भरी हुई है जिसके अंदर, ख़ुशबू लिये मय मस्ताना;
माँग माँग कर मये अरग़वाँ [७], भँवरे पीते जाते हैं,
झूम रहे हैं वज्द[८] में आकर, क्या है गुलिस्ताँ मयख़ाना।

१ मोती २ आसमान ३ बहतापानी ४ शराबी हवा
५ समुद्र का किनारा ६ नजरे ७ लालरंगी की शराब ८ मस्ती

(۳۴)

مثلِ شجر یہ پیرِ مغاں ہے مثل بہاراں پیمانہ
جس میں لبالب بھری ہوئی پُرلطف ہے صہبا مستانہ
پی کے جسے متوالی کویل چہک رہی ٹہنی ٹہنی
ہر کیف کے موسم میں امرائی بن جاتی ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۳۵)

ہلکے جھونکوں کے جاموں میں لیکے مئے کا نذرانہ
بھر کے شمس پلاتا جاتا بن کر ساقی مستانہ
آج شجر بھی جھوم جھوم کر نئی ڈالتا ہے بیلیں
پی کر سب مدمست ہوئے ہیں گُلشن میں ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۳۶)

پیر مغاں ہاں بن کے سحر میں افق دوشیزہ کا آنا
گوہر ستاروں بھری دے چادر لیتی صلہ مئے مستانہ
لاکھوں شعاؤں کے ہاتھوں پی طائیر پاگل ہو گاتے
قدرت کامل نور سحر میں ظاہر ہوتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(३४)

मिस्लेशजर[१] ये पीरेमुग़ाँ है; मिस्ले बहाराँ[२] पैमाना,
जिसमे लबालब भरी हुई, पुरलुत्फ़[३] है सैहबा मस्ताना;
पी के जिसे मतवाली कोयल, चहक रही टहनी टहनी,
हर कैफ़[४] के मौसम में अमराई, बन जाती है मयख़ाना।

(३५)

हलके झोकों के जामों में, ले के मय का नज़राना,
भरके शम्स[५] पिलाता जाता, बनकर साक़ी मस्ताना;
आज शजर[६] भी झूम झूमकर, नई डालता है बेलें,
पीकर सब मदमस्त हूये हैं, गुलशन में है मयख़ाना।

(३६)

पीरेमुग़ाँ हाँ बन के सहर[७] में, उफ़क़[८] दोशीज़ा[९] का आना,
गोहर[१०] सितारों भरी दे चादर, लेती सिला मय मस्ताना;
लाखों शुआओं[११] के हाथों पी, तायर[१२] पागल हो गाते,
कुदरते कामिल नूरे सहर में, जाहिर होता मयख़ाना।

१ पेड की तराह २ बहार का मौसम ३ मजेदार ४ नशा ५ सुरज ६ पेड
७ सुबह ८ क्षितीज ९ लडकी १० मोती ११ किरणे १२ पक्षी

(۳۷)

اُتر نشہ جب اُسکا جاتا آتی شام کی رُخسانہ
بہت پُرانی بہت نشیلی روز پلا مئے مستانہ
رنج والم بیتابئ ہستی اسکو پی کر مٹ جائے
ہوس کے پیکر بے خود ہوتے رہا جاگتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۳۸)

کرے تیرگی مئے فروشی قمر ہے ساقی مستانہ
اپنی شعاؤں میں جو لُٹائے عمدہ نشیلا پیمانہ
پی کے اسے کھوتے ہیں خودی کو بھاری بھاری پلکیں ہیں
کاہکشاں سے پینے والو نہیں رات یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۳۹)

چاہے جدھر میں پھیروں نگاہیں دکھتی بادہ مستانہ
اُٹھے جدھر یہہ چشم بصیرت دکھتا مجھکو پیمانہ
جدھر پھراوں نظریں اپنی مجھ کو دکھائی دے ساقی
آنکھ بند کر کے بھی دیکھوں نظر میں جھومے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(३७)

उतर नशा जब उसका जाता, आती शाम की रूख़साना[१],
बहुत पुरानी बहुत नशीली, रोज पिला मय मस्ताना;
रंजो[२] अलम बेताबिये[३] हस्ती, इसको पी कर मिट जाये,
हवस[४] के पैकर बेख़ुद[५] होते, रहा जागता मयख़ाना।

(३८)

करे तीरगी[६] मयफ़रोशी, क़मर[७] है साकी मस्ताना,
अपनी शुआओं[८] में जो लुटाये, उमदा नशीला पैमाना;
पी के इसे खोतें है ख़ुदी को, भारी भारी पलकें है,
काहकशाँ[९] से पीने वालो, नहीं रात ये मयख़ाना।

(३९)

चाहे जिधर मैं फेरूं निगाहें, दिखती बादा मस्ताना,
उठे जिधर ये चश्में[१०] बसीरत, दिखता मुझको पैमाना;
जिधर फिराऊँ नज़रें अपनी, मुझको दिखाई दे साक़ी,
आँख बंद करके भी देखूं, नज़र में झूमे मयख़ाना।

१ नर्तकी २ दुखः दर्द ३ जिवन की बेचैनी ४ वासना के पुतले
५ बेहोश ६ अंधेरा ७ चांद ८ किरणे ९ सितारों का झुरमुट
१० सही नजर, पवित्र दृष्टी

(۴۰)

ساقی بن کر بنسی آئی ہے ہاتھ میں لے کر پیمانہ
جس میں لبالب بھر کر لائی مئے ہے لبوں کی مستانہ
کرشن دیوکر صحبت اسکی نٹور ناگر کہلائے
دیکھو اچھوں اچھوں کو ہے ناچ نچاتا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۴۱)

مئے فروش جب بنا ہے مُطرب لے کر مئے وہ مستانہ
نغموں کی لئے بنا ساقیا تاروں کا بھر پیمانہ
بیچنے والوں کے ہیں اشارے دوڑ سُروں اور تانوں میں
اہلِ محفل کو ہے پلائے بجے رُبابِ میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۴۲)

پیر مُغاں بن آیا مُصور لے کے قلم کا پیمانہ
جس میں بھر کے وہ ہے پلاتا رنگوں کی مئے مستانہ
پی کے جسے دل کی تصویریں رنگ برنگی ہوجاتی
پردے پر تصویر ہے رقصاں دلکش رنگیں میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(४०)

साकी बनकर बंसी आई, है हाथ में लेकर पैमाना,
जिसमें लबालब भरके लाई, मय है लबों की मस्ताना;
कृष्णदेव कर सोहबत इसकी, नटवर नागर कहलाये,
देखो अच्छों अच्छों को है, नाच नचाता मयख़ाना।

(४१)

मयफ़रोश जब बना है मुतरीब [१], लेकर मय वो मस्ताना,
नग़मों की लय बना साक़िया, तारों का भर पैमाना;
बेचने वालों के हैं ईशारे, दौड सुरों और तानों में,
अहले महफिल को है पिलाये, बजे रूबाबे [२] मयखाना।

(४२)

पीरेमुग़ाँ बन आया मुस्सविर [३], लेके क़लम का पैमाना,
जिसमें भर के वो है पिलाता, रंगो की मय मस्ताना;
पी के जिसे दिल की तस्वीरें, रंग बिरंगी हो जाती,
पर्दे पर तस्वीर है रक़्साँ [४], दिलकश रंगी मयख़ाना।

१ गानेवाला २ बाजा ३ चित्रकार ४ नाचना

(۴۳)

سیاہ فام انگوری گھٹا سے آتی ہے مئے مستانہ
شمس کنول کلیوں کی پیالی اور گُلوں کا پیانہ
وجد میں آکر خود ہی ساقیا مئے گوہر سے بھرجاتی
ہنس مست ہو ہو کر پیتے مان سروور میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۴۴)

آج ہمالہ بنا انگوری آب بنی مئے مستانہ
ندیاں شوخ بنی ہیں ساقی موجیں بنی ہیں پیمانہ
دستِ نازک ساحل میں وہ چھلکا تی ہردم چلتی
مئے نوشی کر کھیت جھومتے وطن مقدّس میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۴۵)

مردِ دِلاور دِل کے خون کی آج بنی مئے مستانہ
فرزند دلیری کے ہیں سروں کا ہاتھوں سے لے پیمانہ
بڑا سخی حاتم ساقی ہے آج بنی بھارت ماتا
آزادی کی پیاسی دیوی بنا ہے مقتل میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(४३)

सियाहफ़ाम[१] अंगूरी घटा से, आती है मय मस्ताना,
शम्सकवल[२] कलियों की प्याली, और गुलों का पैमाना;
वज्द[३] में आकर खुद ही साकिया मयेगोहर[४] से भर जाती,
हंस मस्त हो हो कर पीते, मानसरोवर मयख़ाना।

(४४)

आज हिमाला बना अंगूरी, आब[५] बनी मय मस्ताना,
नदियाँ शोख़[६] बनी है साक़ी, मौजें बनी है पैमाना;
दस्तेनाज़ुक[७] साहिल में वो, छलकाती हरदम चलती,
मय नोशी कर खेत झूमते, वतन मुक़द्दस[८] मयख़ाना।

(४५)

मर्दे दिलावर दिल के ख़ून की, आज बनी मय मस्ताना,
फ़रज़न्द[९] दिलेरी के हैं सरों का, हाथों से ले पैमाना;
बडा सख़ी हातिम[१०] साक़ी है, आज बनी भारत माता,
आज़ादी की प्यासी देवी, बना है मकतल[११] मयख़ाना।

१ काले नशीले बादल २ सुर्यफुल ३ मस्ती ४ मोतीयों की शराब
५ पानी ६ चंचल ७ कोमल हात ८ जन्म भुमी ९ वीर सपूत
१० दानशूर ११ क़त्ल करने की जगह

(۴۶)

دُھتکارا کعبے نے مجھ کو رند سمجھ کر دیوانہ
ٹھکرایا ہے دیر نے مجھ کو ہاتھ میں دیکھ کے پیمانہ
کیسے اماں مل جاتی جہاں میں مجھ سے ابھاگے کافر کو
دست اماں گر آگے بڑھا کر گود نہ لیتا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۴۷)

بن کے مسافر گھوم رہا ہر جگہ ملی مئے مستانہ
جگہ جگہ پر دلبر ساقی جگہ جگہ پر پیمانہ
مجھے ٹہرنے میں اے ہمدم کچھ بھی تو تکلیف نہیں
دیر ملے نہ ملے یہ کعبہ مل جاتا ہے میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۴۸)

سجے نہ کعبہ اور نمازی کہتا ہے یہ فرزانہ
سج دھج کر پر ساقی آتا بن ٹھن کر یہ مستانہ
کہاں تقابل شیخ یہاں پر کعبہ اور میخانے میں
روتا رہا ہر وقت یہ کعبہ ہنستا رہا ہے میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(४६)

धुतकारा काबे [१] ने मुझको, रिंद समझकर दीवाना,
ठुकराया है दैर[२] ने मुझको, हाथ में देख के पैमाना;
कैसे अमाँ [३] मिल जाती जहाँ में, मुझसे अभागे काफ़िर[४] को,
दस्तेअमाँ[५] गर आगे बढ़ाकर, गोद न लेता मयख़ाना।

(४७)

बन के मुसाफ़िर घुम रहा, हर जगह मिली मय मस्ताना,
जगह जगह पर दिलबर साक़ी, जगह जगह पर पैमाना;
मुझे ठहरनें में अय हमदम, कुछ भी तो तकलीफ़ नहीं,
दैर मिले ना मिले ये काबा, मिल जाता है मयख़ाना।

(४८)

सजे न काबा और नमाज़ी, कहता है ये फ़रज़ाना,
सज धज कर पर साक़ी आता, बनठन कर ये मस्ताना;
कहाँ तक़ाबुल[६] शेख यहाँ पर, काबा और मयख़ाने में,
रोता रहा हर वक़्त ये काबा, हंसता रहा है मयख़ाना।

१ मस्जिद २ मंदीर ३ शरण ४ नास्तीक
५ शरण देनेवाले हाथ ६ मुकाबला

(۴۹)

بجے ڈھول اور نام خُدا کو بھول گیا ہے فرزانہ
برق گری پر مئے تصور پی کر بے خود مستانہ
شیخ بُرامت کہنا اس کو سچ کہتا ہوں مسجد کو
صدیوں تک سکھلائے گا یہ کرنا عبادت میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۵۰)

ہندو مُسلماں دو ہیں لیکن ایک مگر ہے پیمانہ
ایک ہی صہبا ساقی اُنکا ایک ہے اُنکا خُم خانہ
دونوں جب تک ایک نہ ہوتے دیر وحرم میں جاتے ہیں
لڑواتے ہیں دیر وحرم یہ گلے ملاتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۵۱)

شیخ نمازی پنڈت جس نے مالا جپنا ہی جانا
رکھے دشمنی اور کہے یہ بُرا ہے بادہ پیمانہ
ایک بار بس میخانے کے آگے سے ہو کر نکلے
دیکھوں کیسے پکڑ نہ لیتا دامن اُسکا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(४९)

बजे ढोल और नामे ख़ुदा को, भूल गया है फ़रज़ाना,
बर्क़[१] गिरी पर मये तसव्वुर[२], पीकर बेख़ुद मस्ताना;
शेख़ बुरा मत कहना इसको, सच कहता हूँ मस्जिद को,
सदियों तक सिखलायेगा ये, करना इबादत मयख़ाना।

(५०)

हिंदू मुसलमाँ दो है लेकिन, एक मगर है पैमाना,
एक ही सहेबा साक़ी उनका; एक है उनका ख़ुमख़ाना[३];
दोनों जब तक एक न होते, दैरोहरम[४] में जाते है,
लडवाते है दैरोहरम ये; गले मिलाता मयख़ाना।

(५१)

शेख नमाज़ी पंडित जिसने, माला जपना ही जाना,
रखे दुश्मनी और कहे ये, बुरा है बादा[५] पैमाना;
एक बार बस, मयख़ाने के, आगे से होकर निकले,
देखूँ कैसे पकड़ न लेता, दामन उसका मयख़ाना।

१ बिजली २ कल्पना की शराब ३ मयख़ाना
४ मंदीर मस्जिद ५ बुरी शराब

(۵۲)

مزہ تبھی تک اور رسوں میں دور رہے مئے مستانہ
اترا لے سب پیالے جب تک آگے نہ آتا پیمانہ
کر لے عبادت شیخ و برہمن تب تک دیر و کعبہ میں
اُٹھا نقابِ رُخ نہ جب تک سامنے آتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۵۳)

آج کرے پرہیز جہاں پر کل پینا مئے مستانہ
آج کرے انکار جہاں کل تھامنا ہوگا پیمانہ
صہبا کا محمود جہاں میں پیدا کوئی ہوجانے دو
جہاں ابھی یہ دیروحرم ہیں وہاں بنے گا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۵۴)

دہک یہاں پر یدنیہ کی آتش صہبا بھٹی ہوجانا
پیروں ولی سا دھیان میں بیٹھا ہر صہبا کا مستانہ
جنت کی حوروں سا پھرتا مینا لیکر کے ساقی
رشکِ جنت بنا ہوا ہے پاک صاف یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(५२)

मज़ा तभी तक और रसों में, दूर रहे मय मस्ताना,
इतरा ले सब प्यालें जबतक, आगे न आता पैमाना;
करले इबादत शेख़ो बिऱ्हेमन, तब तक दैरो काबा[१] में,
उठा नक़ाबे रूख़ ना जब तक, सामने आता मयख़ाना।

(५३)

आज करे परहेज़ जहाँ पर, कल पीना मय मस्ताना,
आज करे इनकार जहाँ कल, थामना होगा पैमाना;
सहेबा[२] का महमूद जहाँ में, पैदा कोई हो जाने दो,
जहाँ अभी ये दैरोहरम है, वहाँ बनेगा मयख़ाना।

(५४)

दहक यहाँ पर यज्ञ की आतिश[३], सहेबा [४] भट्टी हो जाना,
पीरों वली सा ध्यान में बैठा, हर सहेबा का मस्ताना;
जन्नत की हूरों सा फिरता, मीना[५] लेकर के साक़ी,
रश्के जन्नत बना हुआ है, पाक साफ़ ये मयख़ाना।

१ मंदीर मस्जीद २ मस्ती का देवता ३ यज्ञ की ज्वाला
४ शराब की भट्टी ५ सुराही

(۵۵)

بھانگ گھوٹ پُر کھے پیتے تھے ہم نے کہا مئے مستانہ
پتوں کی پیالی تھی اُن کی ہم نے کہا ہے پیمانہ
آج پرانی رسم نہ چھوڑو مذہب کے ٹھیکیداروں
صدیوں سے کرتے ہیں عبادت نیا نہیں ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۵۶)

متھ کے سمندر آبِ کوثر بنی آج مئے مستانہ
کہلائے اب نُور حُور کا ساقی اور یہ پیمانہ
جسے فرشتے پیتے آئے پیر و ولی کیا چھوڑیں گے
کس میں کتنا ظرف ہے اسکو خوب سمجھتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۵۷)

کبھی سُنا کیا چھو دی اس نے ہاں میری مئے مستانہ
کبھی نہ کہتا کوئی اُس نے جُھوٹا کیا ہے پیمانہ
سبھی قوم کے لوگ یہاں پر ساتھ بیٹھ کر پیتے ہیں
دورِ ارتقا کا یہ مرکز آج بنا ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(५५)

भांग घोट पुरखे पीते थे, हमने कहा मय मस्ताना,
पत्तों की प्याली थी उनकी, हमने कहा है पैमाना;
आज पुरानी रस्म न छोडो, मज़हब के ठेकेदारों,
सदियों से करते है ईबादत, नया नहीं है मयख़ाना।

(५६)

मथ के समंदर आबे कौसर[१]; बनी आज मय मस्ताना,
कहलाये अब नूर हूर का, साक़ी और ये पैमाना;
जिसे फ़रिश्ते पीते आये; पीरोवली क्या छोडेंगे?
किसमें कितना ज़र्फ़[२] है इसको; खूब समझता मयख़ाना।

(५७)

कभी सुना क्या छू दी इसने; हाँ मेरी मय मस्ताना,
कभी न कहता कोई उसने, झुठा किया है पैमाना;
सभी क़ौम के लोग यहाँपर, साथ बैठकर पीते है,
दौरे इरतेक़ा[३] का ये मरकज़[४], आज बना है मयख़ाना।

१ स्वर्ग की नहर का पानी २ दमखम
३ समय की तरक्की ४ ठिकाणा

(۵۸)

رنج والم غم بھولے سارے پی کر کے مئے مستانہ
بڑی نصیحت پائی تم نے رہنا سیکھا رندانہ
بنتے ہو بیکار ہریجن تم تو میکش ہی اچھے
ٹھکراتے مذہب کے اندھے دل سے لگاتا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۵۹)

استقبال یہ کرتا سب کا پیرِ مُغاں ہے فرزانہ
دانش اور ناداں میں فرق کیا رند بنے جب دیوانہ
چھوٹے بڑے میں فرق کبھی کیا دیکھا کسی میخانے میں
مساوات کا پہلا رہنما ہے یہ میرا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۶۰)

بار بار آگے بڑھ میں نے مانگی نہیں مئے مستانہ
اسے سمجھ کر آنک نہ لینا ظرف ہے میرا رندانہ
پہلے ختم تو ہوجانے دے اپنے تکلف کو ساقی
میری ہی آواز سے ہردم پھر گونجے گا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(५८)

रंजो अलम ग़म भूले सारे; पीकर के मय मस्ताना,
बडी नसीहत पाई तुमने; रहना सीखा रिंदाना,
बनते हो बेकार हरिजन, तुमतो मयकश ही अच्छे;
ठुकराते मजहब के अंधे; दिल से लगाता मयख़ाना।

(५९)

इस्तक़बाल[१] ये करता सबका; पीरेमुग़ाँ है, फरज़ाना,
दानिश और नादाँ में फर्क़ क्या; रिंद बने जब दीवाना;
छोटे बडे में फर्क़ कभी क्या; देखा किसी मयख़ाने में,
मसावात[२] का पहला रहनुमाँ; है ये मेरा मयख़ाना।

(६०)

बार बार आगे बढ मैंने; मांगी नहीं मय मस्ताना,
इसे समझ कर आंक न लेना; ज़र्फ है मेरा रिंदाना;
पहले ख़त्म तो हो जाने दे, अपने तकल्लुफ़[३] को साक़ी,
मेरी ही आवाज़ से हरदम, फिर गूंजेगा मयख़ाना।

१ स्वागत   २) समाजवाद   ३ शिष्टाचार

(٦١)

کل کل پر ہے کب یہ بھروسہ کرتا مئے کا مستانہ
ساکت ہاتھ یہ کل ہو سکتے جس سے اُٹھا ہے پیمانہ
آج ہاتھ میں تھا وہ کھویا کل کا کون بھروسہ ہے
میرے حق میں ہو نہ جائے کل کی موت کا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(٦٢)

ملا ہے موقع جی بھر کر میں کیوں نہ پیوں مئے مستانہ
وقت ملا ہے آج نہ کیوں پھر جی بھر ڈالوں پیمانہ
چھیڑ چھاڑ اپنے ساقی سے آج نہ کیوں جی بھر کرلوں
ایک مرتبہ ہی ملنا ہے ہستی کو یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(٦٣)

حرکت میں آنے دو دلبر آج لبوں کا پیمانہ
بھر کے تم لے آنا اُس میں جوبن کی مئے مستانہ
اور لگا کر میرے لبوں سے بھول ہٹا نہ تم جاؤ
لگا تار پینے والا ہوں کھُلے عشق کا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(६१)

कल? कल पर है, कब ये भरोसा, करता मय का मस्ताना,
साकीत[१] हाथ ये कल हो सकते; जिससे उठा है पैमाना;
आज हाथ में था वह खोया; कल का कौन भरोसा है,
मेरे हक़ में हो ना जाये; कल की मौत का मयख़ाना।

(६२)

मिला है मौक़ा जी भर कर मैं, क्यों न पीऊँ मय मस्ताना,
वक़्त मिला है आज न क्यों फिर; जी भर ढालूं पैमाना;
छेड छाड अपने साक़ी से, आज न क्यों जी भर करलूं,
एक मरतबा ही मिलना है, हस्ती को ये मयख़ाना।

(६३)

हरकत में आने दो दिलबर, आज लबों[२] का पैमाना,
भर के तुम ले आना उसमें जोबन की मय मस्ताना;
और लगाकर मेरे लबों से, भूल हटा ना तुम जाओ,
लगातार पीने वाला हूँ, खुले इश्क़ का मयख़ाना।

१) रूके हुये हात जो हिल नही सकते १) होंठों

(۶۴)

ماہ لقا سا تیرا چہرہ سیم و زر کا پیانہ
حُسن گوہر کی چھلک رہی ہے جس میں مئے وہ مستانہ
پیر مُغاں بن کر کے میں ہی میکش میں خود بنتا ہوں
جہاں کہیں مل بیٹھے ہم تم وہاں بنا ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۶۵)

دو ہی روز مئے مجھے پلا کر تھکا ہے ساقی دیوانہ
بھر کر اب سرکا دیتا ہے میرے آگے پیانہ
ناز و ادا انداز سے اب تو ہائے پلانا دُور ہوا
فقط نام کے لئے کیا ہے فرض ادائی میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۶۶)

چار روز کی عمر میں کتنا پیار کروں پی خُم خانہ
فانی جہاں میں آتے آتے میں نے سُنا جانا جانا
ساتھ میں استقبال کے دیکھی رُخصت کی بھی تیاری
کُھلتے ہی اب بند ہو رہا میری عُمر کا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(६४)

माहेलक़ा[१] सा तेरा चेहरा, सीमोज़र[२] का पैमाना,
हुस्नेगोहर[३] की छलक रही है; जिसमे मय वो मस्ताना;
पीरोमुग़ाँ बनकर के मैं ही, मयक़श मैं खुद बनता हूँ,
जहाँ कहीं मिल बैठे हम तुम, वहाँ बना है मयख़ाना ।

(६५)

दो ही रोज मय मुझे पिलाकर; थका है साक़ी दिवाना,
भर कर अब सरका देता है; मेरे आगे पैमाना;
नाज़ो अदा अंदाज़ से अब तो, हाय पिलाना दूरहुआ,
फकत नाम के लिये किया है , फर्ज अदाई मयखाना ।

(६६)

चार रोज़ की उम्र में कितना, प्यार करूं पी ख़ुमख़ाना[१],
फ़ानी[४] जहाँ में आते आते; मैने सुना जाना जाना:
साथ में इस्तक़बाल के देखी; रूख़सत की भी तैयारी,
खुलते ही अब बंद हो रहा; मेरी उम्र का मयख़ाना ।

१ चांदसी सुरत २ सोना चांदी ३ हिरे जैसी सुंदरता ४ मिटनेवाला

(٦٧)

کیا پینا بے لوث نہ پی لوں پیمانے پر پیمانہ
کیا جینا بے خوف نہ جب تک ساتھ ہو پیرِ میخانہ
کھو جانے کا خطرہ لگا ہے مل جانے کی راحت میں
نہیں وصل کی خوشی ہے حاصل مل کر بھی یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(٦٨)

مئے نوشی کی خاطر لائے اتنی سی مئے مستانہ
مجھے بتانے کو لائے ہو ادنیٰ سایہ پیمانہ
ایسی مئے نوشی سے بہتر ساغر کی لے پیاس مروں
میں تو سمندر سا تشنہ ہوں بوند برابر میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(٦٩)

کیا کہتے ہو نہیں ہے باقی کاسے میں مئے مستانہ
کیا کہتے ہو نہیں چلیگا مالا بنا جو پیمانہ
مُنہ کو لگی پھر بڑھی تشنگی بچی نہیں کچھ پینے کو
پیاس بجھانے کو بُلوا کر پیاس بڑھاتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(६७)

क्या पीना बेलौस[१] न पी लूं, पैमाने पर पैमाना,
क्या जीना बेख़ौफ़, न जब तक, साथ हो पीरे मयखाना;
खो जाने का ख़तरा लगा है, मिलजाने की राहत में,
नहीं वस्ल[२] की खुशी है हासील, मिलकर भी ये मयख़ाना।

(६८)

मयनोशी की ख़ातिर लाये, इतनी सी मय मस्ताना,
मुझे बताने को लाये हो, अदना[३] सा ये पैमाना;
ऐसी मयनोशी से बेहतर, साग़र की ले प्यास मरूं,
मैं तो समंदर सा तिश्ना[४] हूँ, बूंद बराबर मयख़ाना।

(६९)

क्या कहते हो नही है बाक़ी, कासे[५] में मय मस्ताना,
क्या कहते हो नही चलेगा, माला बना जो पैमाना;
मुँह को लगी फिर बढी तिश्नगी, बची नहीं कुछ पीने को,
प्यास बुझाने को बुलवाकर, प्यास बढाता मयख़ाना।

१ खुले दिलसे २ मिलन ३ छोटा ४ प्यासा ५ कटोरा

(۷۰)

قسمت میں جتنی لکھی بس اُتنی ملے مئے مستانہ
لکھا مُقدر میں جیسا بس ویسا ملیگا پیمانہ
لاکھ کوششیں کرلے لیکن اس سے حاصل کیا ہوگا
جیسا لکھا تقدیر میں تیرے ویسا ملیگا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۷۱)

کرلے کرلے مجھ سے بخیلی دینے میں مئے مستانہ
دے لے دے لے تو مجھ کو بس ٹوٹا پھوٹا پیمانہ
میں نے اسی پر صبر کیا ہے ہوگا پشیماں تو پیچھے
میں نہ رہوں گا جب تب میری یاد کریگا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۷۲)

عزّت ذِلّت بھول گیا میں پی کرکے مئے مستانہ
مان ایمان کا خیال میں بھولا ہاتھ جو آیا پیمانہ
پیر مُغاں کی میٹھی جھڑکی سے کیا ہے توہین ہوئی
سارے جہاں کی کھاکے ٹھوکریں پایا میں نے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(७०)

क़िस्मत में जितनी लिखी बस, उतनी मिले मय मस्ताना,
लिखा मुक़द्दर में जैसा बस, वैसा मिलेगा पैमाना;
लाख कोशिशें करले लेकिन, इससे हासिल क्या होगा,
जैसा लिखा तक़दीर में तेरे, वैसा मिलेगा मयख़ाना।

(७१)

करले करले मुझसे बख़ीली[१], देने में मय मस्ताना,
दे ले दे ले तू मुझको बस, टूटा फूटा पैमाना;
मैंने इसी पर सब्र किया है, होगा पशेमाँ[२] तू पीछे,
मैं न रहूगां जब तब मेरी, याद करेगा मयख़ाना।

(७२)

इज़्ज़त - ज़िल्लत[३] भुल गया मै, पी कर के मय मस्ताना,
मान - अपमान का ख़्याल मैं भूला, हाथ जो आया पैमाना;
पीरेमुगाँ की मीठी झिडकी, से क्या है तोहिन[४] हुई,
सारे जहाँ की खाके ठोकरें, पाया मैंने मयख़ाना।

१ कंजुसी २ शरमिंदा ३ जलील होना ४ अपमान

(۷۳)

کمتر لاغر حُباب سا ہے آدم خاک کا پیمانہ
جس میں بھری ہے ہستی کی وہ تلخ و شیریں مئے مستانہ
موت بنی بے درد ہے ساقی لاکھوں ہاتھ کو پھیلائے
وقت بڑا میخوار بنا ہے بنا تناسخ میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۷۴)

ہمیں جام ساڈھال بھر گیا ہستی کی مئے مستانہ
کیف پسند نہ آیا ڈھالا ہم نے مئے کا پیمانہ
غمِ زندگی جب ہے اُبھرتا اُسے دباتے ساغر میں
روزِ ازل کے پیر مُغاں سے جنگ کرے ہے میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۷۵)

اپنے انگوروں سے بدن میں ہم نے بھری مئے مستانہ
نارِ دوزخ ہمیں تپائے شیخ تمہارا بتلانا
تب تو صہبا خوب کھنچیگی اور پیئے گا بھی کوئی
نارِ دوزخ میں بھی ہم کو نظر آئیگا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(७३)

कमतर[१] लाग़र? हुबाब[२] सा है, आदम ख़ाक का पैमाना,
जिसमें भरी है हस्ती की वो, तल्ख़ो शीरीं[३] मय मस्ताना;
मौत बनी बेदर्द है साक़ी, लाखों हाथ को फैलाये;
वक्त बडा मयख़ार बना है, बना तनासुख़[४] मयख़ाना।

(७४)

हमें जाम सा ढाल भर गया, हस्ती की मय मस्ताना,
कैफ़[५] पसंद न आया ढाला, हमने मय का पैमाना;
ग़मे जिंदगी जब है उभरता, उसे दबाते साग़र में,
रोज़े अज़ल[६] के पीरेमुगां से, जंग करे है मयख़ाना।

(७५)

अपने अंगूरों से बदन में, हमने भरी मय मस्ताना,
नारे दोज़ख़[७] हमें तपाये, शेख़ तुम्हारा बतलाना;
तब तो सहेबा ख़ूब ख़िचेगी, और पियेंगा भी कोई,
नारे दोज़ख़ में भी हमको, नज़र आयेगा मयख़ाना।

१ कमजोर २ पानी का बुलबुला ३ कड़ूवी मिठ्ठी ४ कालचक्र
५ नशा ६ प्रलय दिवस ७ नर्क की आग़

(۷۶)

مُلک الموت جو لینے آئے پی کے چلوں مئے مستانہ
درد و الم مشکل دوزخ کے کیا سمجھے گا دیوانہ
خوف ناک بے درد بھیانک دوزخ کے رکھوالوں کے
گُرزوں کی جب مار پڑیگی آڑ کریگا میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(۷۷)

میرے لبوں سے پیار بھری گر بات کرے مئے مستانہ
خالی ہاتھوں کا میرے گر دل بہلادے پیمانہ
نُقصان بتا کیا دنیا تیرا بے سود مجھے بدنام نہ کر
میرے شکستہ دل کا ہے بس ایک کھلونا میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(۷۸)

غمِ زندگی یاد نہ آئے پی لیتا مئے مستانہ
فکر جہاں سے رہنے الگ بس اُٹھالیا ہے پیمانہ
شوق وطلب اور مزے کی خاطر ساری دُنیا پیتی ہے
پر میں وہ بیمار ہوں جسکی ایک دوا ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(७६)

मलीकुल[१] मौत जो लेने आये, पी के चलूँ मय मस्ताना,
दर्दो अलम[२] मुश्किल दोज़ख़[३] को क्या समझेगा दीवाना;
ख़ोफ़नाक बेदर्द, भयानक, दोज़ख़ के रख़वालों के,
गुर्ज़ों की जब मार पडेगी, आड़ करेगा मयख़ाना।

(७७)

मेरे लबों से प्यार भरी गर, बात करें मय मस्ताना,
ख़ाली हाथों का मेरे गर, दिल बहाला दे पैमाना;
नुक़सान बता क्या दुनियाँ तेरा, बेसूद[४] मुझे बदनाम न कर,
मेरे शिकस्ता[५] दिल का है बस, एक खिलोना मयख़ाना।

(७८)

ग़मे ज़िंदगी याद न आये, पी लेता मय मस्ताना,
फ़िक्रे[६] जहाँ से रहने अलग बस, उठा लिया है पैमाना;
शौक़ो तलब और मज़े की ख़ातिर सारी दुनियाँ पीती है,
पर मै वो बीमार हूँ जिसकी, एक दवा है मयख़ाना।

१ यमराज २ दुःख दर्द ३ नर्क की कठीनाई ४ बेमतलब ५ टूटाहुवा
६ दुनिया की फिक्र

(۷۹)

روز گری جاتی ہے ہمدم ہستی کی مئے مستانہ
کھنڈر بنتا جائے دلبر روز بدن کا پیمانہ
جان جہاں ناراض ہورہا روز یہ ساقی جوبن کا
خشک ہو رہا روز خوبرو ہستی کا یہ میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۸۰)

قضا آرہی ساقی بن کر لیے زہر کا پیمانہ
پی نہ ہوش میں پھر آئیگا مئے کا بے خود دیوانہ
یہی آخری بے ہوشی ہے ساقی آخر پیمانہ
رہرو پیار سے پینا اسکو پھر نہ ملیگا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۸۱)

بدن صُراحی سے جب چھلکے ہستی کی مئے مستانہ
پیرِ مُغاں جب آئے زہر کا لے کے آخری پیمانہ
بارِ جام نہیں ہاتھوں میں لب بھی لذت بھول گئے
کانوں میں تم کہتے رہنا ساغر صہبا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(७९)

रोज़ गिरी जाती है हमदम, हस्ती की मय मस्ताना,
खंडहर बनता जाये दिलबर, रोज़ बदन का पैमाना;
जाने जहाँ नाराज़ हो रहा, रोज़ ये साक़ी जोबन का,
खुश्क[1] हो रहा रोज़ ख़ूबरू[2], हस्ती का ये मयख़ाना।

(८०)

कज़ा[3] आरही साक़ी बनकर लिये ज़हर का पैमाना,
पी नाःहोश में फिर आयेगा, मय का बेख़ुद दीवाना;
यही आख़री बेहोशी है, साक़ी आखीर पैमाना,
रह रव[4] प्यार से पीना इसको फिर ना मिलेगा मयख़ाना।

(८१)

बदन सुराही से जब छलके, हस्ती की मय मस्ताना,
पीरोमुग़ाँ जब आये ज़हर का ले के आख़री पैमाना;
बारेजाम नहीं हाथों में, लब भी लज़्ज़त भूल गये,
कानों में तुम कहते रहना, साग़र, सहेबा, मयख़ाना।

१ सूखा २ खुबसुरत ३ मौत ४ मुसाफिर

(۸۲)

میرے لبوں پر آخری شئے نہ تلسی دل ہو پیمانہ
میری زباں پر آخری شئے نہ گنگا جل مئے مستانہ
میرے جنازے کے پیچھے او چلنے والو یاد رکھو
رام نام ہے ستیہ نہ کہنا کہنا سچا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۸۳)

میری لاش پر وہ روئے جو جن کے اشک مئے مستانہ
آہ بھرے وہ جو ہے مہکتا مئے پی کر کے دیوانہ
وے ئے کندھا دے مجھ کو جنکے پاؤں لگے ڈگمگ کرنے
اور جلوں اُس جگہ جہاں پر کبھی رہا ہو میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۸۴)

میری چتا پر جائے اُنڈیلا کاسہ نہ گھی کا پیمانہ
گھڑا بندھے انگور بیل سے جس میں ہو مئے مستانہ
جان جہاں تم میری تیرہویں جب کرنا ایسی کرنا
میخواروں کو دعوت دیکر کھلوا دینا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(८२)

मेरे लबो पर आख़री शय[१] ना, तुलसी दिल हो पैमाना,
मेरी ज़ुबाँ पर आख़री शय ना, गंगाजल मय मस्ताना;
मेरे ज़नाजे के पीछे ओ, चलने वालों याद रखो,
राम नाम है सत्य न कहना, कहना सच्चा मयख़ाना।

(८३)

मेरी लाश पर वो रोये, जो जिनके अश्क[२] मय मस्ताना,
आह भरे वो जो है महकता, मय पी करके दीवाना;
वो कंधा दे मुझको जिनके, पाँव लगे डगमग करने,
और जलूं उस जगह जहाँ पर कभी रहा हो मयख़ाना।

(८४)

मेरी चिता पर जाय ऊंडेला, कासा न घी का पैमाना,
घडा बंधे अंगुर बेल से जिसमें हो मय मस्ताना;
जाने जहाँ तुम मेरी तेरहवीं जब करना, ऐसी करना,
मयख़्वारों को दावत देकर, खुलवा देना मयख़ाना।

१) चिज २) आँसू

(۸۵)

پوچھے میرا نام کوئی تو کہنا رند ہے دیوانہ
شغل ہے پینا اور پلانا سب کو مئے کا پیمانہ
ذات کوئی پوچھے دلبر تو کہہ دینا میخواروں کی
دین بتانا ساغر کا لے مالا جپنا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۸۶)

علم ہوا ہے قضا آرہی لے کالی وہ مئے مستانہ
قاضی اپنا کلمہ بھولا عابد بھولا خدا خانہ
اور عبادت بھولا نمازی علم سبھی عالم بھولا
بادِ مرگ بھلا نہ پایا میکش اپنا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۸۷)

قضا مجھے لے چلنا ہے تو چل لے کر مئے مستانہ
چلنے دے ساقی کو میرے ہاتھ میں لیکر پیمانہ
دوزخ جنت جہاں کہیں بھی مرضی ہو لیکر کے چل
فرق پڑے کیا کسی جگہ میں ساتھ رہے جب میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(८५)

पूछे मेरा नाम कोई तो, कहना रिंद है दीवाना,
शग़ल है पीना और पिलाना सबको मय का पैमाना;
ज़ात कोई पूछे दिलबर तो, कह देना मयख़्वारों की,
दीन बताना साग़र का, ले माला जपना मयख़ाना।

(८६)

इल्म हुआ है क़ज़ा[१] आरही, ले काली वो मय मस्ताना,
क़ाज़ी अपना कलमा भूला, आबिद[२] भूला ख़ुदा ख़ाना;
और ईबादत भूला नमाज़ी, ईल्म सभी आलीम[३] भूला,
बादेमर्ग[४] भुला ना पाया, मयकश अपना मयखाना।

(८७)

कज़ा मुझे ले चलना है तो, चल लेकर मय मस्ताना,
चलने दे साक़ी को मेरे, हाथ में लेकर पैमाना,
दोजख़[१] - जन्नत[२] जहाँ कहीं भी, मर्ज़ी हो लेकर के चल,
फ़र्क़ पडे क्या किसी जगह में, साथ रहे जब मयख़ाना।

१ मौत २ प्रार्थना करने वाला ३ ज्ञानी ४ मरने के बाद

(۸۸)

گُناہ ہے پینا تو تینوں ہی خطا دار ہے کہلانا
روز پلانے والا ساقی پیمانہ مئے مستانہ
ساتھ انہیں لے چلنا میرے بتلانا انصاف یہی
قید جہاں پر میں ہوجاؤں قید وہاں ہو میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۸۹)

سکوں ملا کب دل کی تڑپ کو ساقی پی مئے مستانہ
اور اور کہتا جاتا ہے رند یہاں پر دیوانہ
کتنے ارماں چھوڑ یہاں پر جاتا ہے جانے والا
کتنے ارمانوں کا مدفن بن کے کھڑا ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۹۰)

جو صہبا کی مجھ کو طلب تھی وہ نہ ملی مئے مستانہ
جو ساغر میں مانگ رہا تھا نہیں ملا وہ پیمانہ
جس کے پیچھے تھا دیوانہ وہ نہ ملا مجھ کو ساقی
جس کے پیچھے تھا میں پاگل نہیں ملا وہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(८८)

गुनाह है पीना तो तीनों ही ख़तावार है कहलाना
रोज़ पीलाने वाला साक़ी, पैमाना, मय मस्ताना;
साथ इन्हे ले चलना मेरे, बतलाता ईन्साफ़ यही,
क़ैद जहाँपर मै हो जाऊँ, क़ैद वहाँ हो मयख़ाना।

(८९)

सुकूँ[१] मिला कब दिल की तड़प को, साक़ी पी मय मस्ताना,
और और कहता जाता है, रिंद यहाँपर दीवाना;
कितने अरमाँ छोड यहाँ पर, जाता है जाने वाला,
कितने अरमानों का मदफ़न, बन के ख़डा है मयख़ाना।

(९०)

जो सहेबा की मुझको तलब थी, वह न मिली मय मस्ताना,
जो साग़र मैं मांग रहा था, नहीं मिला वो पैमाना;
जिसके पीछे था दिवाना, वो न मिला मुझको साक़ी[२],
जिसके पीछे था मै पागल नहीं मिला वो मयख़ाना।

१ समाधी

(۹۱)

کب سے آگے دیکھ رہا میں گوہر سی مئے مستانہ

اپنے آگے دیکھ رہا ہوں سیم و زر کا پیمانہ

ہاتھ لگے گا اب یہ میرے، دوڑ رہا اُسکے پیچھے

لیکن دور اُفق کے جیسا مجھ سے میرا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۹۲)

کبھی تیرگی مایوسی کی چھائی چھپتا پیمانہ

آب و تاب صہبا کی چھپتی چھپتا ساقی مستانہ

تنویر اُمید کبھی پھر پیمانہ چمکا جاتا

آنکھ مچولی کھیل رہا ہے مجھ سے میرا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۹۳)

آگے آگے کہہ ہاتھ وہ پیچھے کرتا ساقی مستانہ

لگا لبوں کو یہ کہ ہر بار ہٹاتا پیمانہ

نہیں مجھے معلوم کہاں تک یہ مجھ کو لے جائیگا

بڑھا بڑھا کر مجھ کو آگے پیچھے ہٹتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(९१)

कब से आगे देख रहा मैं, गौहर सी मय मस्ताना,
अपने आगे देख रहा हूँ, सीमोज़र का पैमाना;
हाथ लगेगा अब ये मेरे, दौड़ रहा उसके पीछे,
लेकिन दूर उफ़क़[१] के जैसा, मुझसे मेरा मयख़ाना।

(९२)

कभी तीरगी मायूसी की, छाती छुपता पैमाना,
आबोताब सहेबा की छुपती, छुपता साक़ी मस्ताना;
तनवीरे[२] उम्मीद कभी फिर, पैमाना चमका जाता,
आँख मिचौली खेल रहा है, मुझसे मेरा मयख़ाना।

(९३)

आ आगे कह हाथ वो पीछे, करता साक़ी मस्ताना,
लगा लबों को ये कहकर, हर बार हटाता पैमाना;
नहीं मुझे मालूम कहाँ तक, यह मुझको ले जायेगा,
बढा बढा कर मुझको आगे, पीछे हटता मयख़ाना।

१ क्षितिज २ उम्मीद की किरण

(۹۴)

دستِ طلب میں آتے آتے ہائے پھسلتا پیمانہ
ہونٹوں پر آنے آنے میں ڈُھلک گئی مئے مستانہ
دُنیا والوں آکر میری قسمت کی خوبی دیکھو
رہ رہ جاتا مجھے بارہا ملتے ملتے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۹۵)

حاصل گر ہوسکتی نہیں تو چھپے نہ کیوں مئے مستانہ
نہیں میسر ہوسکتا تو چھپتا نہیں کیوں پیمانہ
دور نہیں کہ ہاروں حوصلہ پاس نہیں جُراءت کرلوں
عبث مجھے دوڑاتا ریگ میں بنا سُراب ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۹۶)

ملے نہ پر للچا للچا کیوں بے تاب کرے مئے مستانہ
ملے نہ پر ترسا ترسا کر کیوں تڑپاتا پیمانہ
تقدیر کے لکھنے والے نے ہے قسمت میں کیا لکھ ڈالا
دُور رہیگا مئے کا دریا پاس رہیگا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(९४)

दस्ते तलब[१] में आते आते, हाय फिसलता पैमाना,
होठों पर आने आने में, ढुलक गई मय मस्ताना;
दुनियाँ वालो आकर मेरी, क़ीस्मत की खूबी देखो,
रह रह जाता मुझे बारहा, मिलते-मिंलते मयख़ाना।

(९५)

हासिलगर हो सकती नहीं तो, छुपे ना क्यो मय मस्ताना,
नहीं मयस्सर हो सकता तो, छुपता नहीं क्यों पैमाना;
दूर नही के हाँरू हौसला, पास नही जुर्रत करलूं,
अबस[२] मुझे दौडाता रेग[३] में, बना सुराब[४] है मयख़ाना।

(९६)

मिले न पर ललचा ललचा क्यों, बेताब करे मय मस्ताना,
मिले न पर तरसा तरसा कर, क्यों तडपाता पैमाना;
तक़दीर के लिखने वाले ने है, क़िस्मत में क्या लिख डाला,
दूर रहेगा मय का दरिया, पास रहेगा मयख़ाना।

१) ईच्छा के हाथ २ बिलावजह ३ रेगीस्तान ४ मूगजल

(۹۷)

میخانے میں کب سے بیٹھا پی نہ سکا مے مستانہ

میں کوشش سے بھرتا لیکن کوئی الٹتا پیمانہ

طاقت کے آگے ہے خستہ تقدیر سُنا ہے مکتب میں

بڑی ہے قسمت بے بس آدم سبق سکھاتا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۹۸)

قسمت میں کشکول تھا خالی کھوج رہا تھا پیمانہ

قسمت میں کچھ اور ڈھونڈتا چشم غزالی مستانہ

کون نصیبہ اپنا سمجھنے میں مجھ جیسا دھوکہ کھایا

قسمت میں شمشان لکھا تھا ڈھونڈ رہا تھا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۹۹)

اُس ساغر سے پیار مجھے جو دور ہاتھ سے پیمانہ

چاہت اُس مئے سے مجھ کو جو دور رہے مئے مستانہ

عشق نہیں حاصل کرنے میں پانے کے ارمانوں میں

مل جاتا گر مجھے نہ اتنا پیارا لگتا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(९७)

मयख़ाने में कब से बैठा, पी न सका मय मस्ताना,
मैं कोशिश से भरता लेकिन, कोई उलटता पैमाना;
ताक़त के आगे है ख़स्ता[१], तक़दीर सुना है मकतब[२] में,
बडी है क़िस्मत बेबस, आदम, सबक़ सिख़ाता मयख़ाना।

(९८)

क़िस्मत में कशकोल[३] था ख़ाली, खोज रहा था पैमाना,
क़िस्मत में कुछ और ढूंढता, चश्मे ग़ज़ाली[४] मस्ताना;
कौन नसीबा अपना समझाने में, मुझ जैसा धोका खाया,
क़िस्मत में शमशान लिखा था, ढूंढ रहा था मयख़ाना।

(९९)

उस साग़र[१] से प्यार मुझे, जो दूर हाथ से पैमाना,
चाहत उस मय से मुझको, जो दूर रहे मय मस्ताना;
ईश्क़ नहीं हासिल करने में, पाने के अरमानों में,
मिल जाता गर मुझे न इतना, प्यारा लगता मयख़ाना।

१ कमजोर २ विद्यालय ३ फकीरों का कटोरा
४ हिरन जैसी आंखे १ प्याला

(۱۰۰)

پیرِ مُغاں کے پاس ذرا سی نعمت ہے مئے مستانہ
بے تاب ہے دنیا پینے کو مئے قسمت کا لے پیانہ
بھیڑ بھاڑ میں کچھ بڑھ جاتے مرے بہت سے دب کرکے
جدوجہد ہستی کو سکھاتا بھیڑ بھرا یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۰۱)

ساقی جب ہے پاس تمہارے تھوڑی سی مئے مستانہ
تشنہ لبی کیوں پیدا کرکے سب کو بناتے دیوانہ
ترس ترس کر ہم مرتے تم چھپ چھپ کر مُسکاتے ہو
ہائے ہمارے رنج والم سے کھیل رہا ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۰۲)

ساقی مرمٹ کر بھی کوئی آگے کردے پیانہ
پی نہ سکے گا دو بوندوں سے زیادہ مئے وہ مستانہ
سرمایہ تھا ساری عُمر کا لوٹ لیا دو بوندوں نے
آدم زاد کو دھوکا دینے بنا جہاں میں میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(१००)

पीरेमुग़ाँ के पास ज़रा सी, नेअमत है मय मस्ताना,
बेताब है दुनिया पीने को मय, क़िस्मत का ले पैमाना;
भीड भाड में कुछ बढ जाते, मरे बहुत से दब करके,
जद्दोजहद[१] हस्ती को सिखाता, भीड भरा ये मयख़ाना।

(१०१)

साक़ी जब है पास तुम्हारे, थोडी सी मय मस्ताना,
तिश्नालबी[२] क्यों पैदा करके, सबको बनाते दीवाना;
तरस-तरस कर हम मरते, तुम छुप छुप कर मुस्काते हो,
हाय हमारे रंजोअलम[२] से, खेल रहा है मयख़ाना।

(१०२)

साक़ी मर मिटकर भी कोई, आगे कर दे पैमाना,
पी न सकेगा दो बूंदो से, ज़्यादा मय वो मस्ताना;
सरमाया[३] था सारी उम्र का, लूट लिया दो बूंदो ने,
आदम ज़ाद को धोखा देने, बना जहाँ में मयख़ाना।

१) कोशीश २ होठों की प्यास ३ पुंजी

(۱۰۳)

جس نے تشنہ رکھا وہ بھی بنی رہے مئے مستانہ

در در بھٹکے عمر گذاری بنا رہے وہ پیمانہ

رندوں کے تشنہ دہنوں سے کبھی دعا بد نکلی ہے

مجھے غمزدہ کیا ہے جس نے پُھولے پھلے وہ میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۱۰۴)

نہیں آرزو آگے بڑھ غیروں کی لوں مئے مستانہ

دھکے دے غیروں کا ساغر نہیں چاہتا ہٹیانا

ساقی میری اور نہ دیکھے مجھ کو ذرا ملال نہیں

اتنا ہی کیا کم آنکھوں سے دیکھ رہا ہوں میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۱۰۵)

مستی بادہ سُن سُن کر ہی جب کے ہُوا ہوں دیوانہ

حال کیا ہوگا پاس لبوں کے آئیگا جب پیمانہ

پیر مغاں تم پاس نہ آنا میں پاگل ہو جاؤں گا

تشنہ میں آباد جہاں میں تم کو مبارک میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(१०३)

जिसने तिश्ना[१] रखा वो भी, बनी रहे मय मस्ताना,
दर दर भटके उम्र गुज़ारी, बना रहे वो पैमाना;
रिंदों[२] के तिश्ना[३] दहनों से, कभी दुवा बद निकली है ?
मुझे ग़मज़दा[४] किया है जिसने, फुले फले वो मयख़ाना।

(१०४)

नहीं आरज़ू आगे बढ़, ग़ैरों की लूँ मय मस्ताना,
धक्के दे ग़ैरों को साग़र, नहीं चाहता हथियाना;
साक़ी मेरी ओर न देखे, मुझको जस मलाल नहीं,
इतना ही क्या कम आखों से, देख रहा हूँ मयख़ाना।

(१०५)

मस्तीये बादा सुन सुन कर ही जब के हुआ हूँ दीवाना,
हाल क्या होगा पास लबों के, आयेगा जब पैमाना;
पीरेमुगाँ तुम पास न आना, मैं पागल हो जाऊँगा,
तिश्ना मैं आबाद जहाँ में, तुमको मुबारक मयख़ाना।

१ प्यासा २ शराबी ३ प्यासा ४ दुःखी

(۱۰۶)

کیا ہے ضرورت مجھ کو مانگوں ساقی سے مئے مستانہ
کیا مجھ کو حاصل جو چاہوں پیر مُغاں سے پیمانہ
مئے کو پی کر رند بنا تو عشق کیا کیا صہبا سے
میں تو پاگل سا ہو جاتا سُنتا ہوں جب میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۰۷)

دینے کو جو مُجھے کہا تھا دے نہ سکے مئے مستانہ
مجھ سے وعدہ جس کا کیا تھا دے نہ سکے وہ پیمانہ
سمجھ آدمی کی کمزوری میں خاموش رہا کرتا
لیکن خود ہی دیکھ مجھے اب جھینپ ہے جاتا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۰۸)

ایک وقت تھا بڑا مُطمئن ذرا ملی مئے مستانہ
سیدھا سادھا ساقی میرا ادنی سا تھا پیمانہ
اس چھوٹی دنیا پر میری جنت صدقے جاتی تھی
وسیع جہاں میں ہائے کھو گیا میرا ادنی میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(१०६)

क्या है ज़रूरत मुझको मांगू, साक़ी से मय मस्ताना,
क्या मुझको हासिल जो चाहूँ, पिरेमुग़ाँ से पैमाना;
मय को पीकर रिंद बना तो, इश्क़ किया क्या सहेबा से,
मैं तो पागल सा हो जाता, सुनता हूँ जब मयख़ाना।

(१०७)

देने को जो मुझे कहा था, दे न सके मय मस्ताना,
मुझसे वादा जिसका किया था, दे न सके वो पैमाना;
समझ आदमी की कमज़ोरी, मै ख़ामोश रहा करता,
लेकिन ख़ुद ही देख मुझे अब, झेंप है जाता मयख़ाना।

(१०८)

एक वक़्त था बडा मुतमईन[१], ज़रा मिली मय मस्ताना,
सीधा सादा साक़ी मेरा, अदना सा था पैमाना;
इस छोटी दुनियाँ पर मेरी, जन्नत सदके जाती थी,
वसी जहाँ में हाय खो गया, मेरा अदना मयख़ाना।

१) संतुष्ट

(۱۰۹)

بہت میکدے دیکھے دیکھی بہت یہاں مئے مستانہ
طرح طرح کا آیا میرے ہاتھوں میں تھا پیمانہ
ایک ایک سے بڑھ کر دلکش ساقی نے تھا پیار کیا
نہیں لگا دلکش آنکھوں کو پہلے جیسا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۱۱۰)

ایک وقت تھا چھلکا کرتی ہونٹوں سے مئے مستانہ
ایک وقت تھا جھوما کرتا میرے ہاتھ میں پیمانہ
ایک وقت تھا رند ساقی کو اٹھا گود میں لیتے تھے
آج بنا شمشان بھیانک ایک وقت تھا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(۱۱۱)

جلا کے دل کو ٹھیس لگی شکوہ کی مئے مستانہ
پل پل چھلکا کرتا تھا میرے ہونٹوں کا پیمانہ
آنکھوں سے ساقی کے پی کر رُخسار سُرخ ہیں ہو جاتے
نہیں ہجر کا مارا میں ہوں چلتا پھرتا میخانہ

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

(१०९)

बहुत मयकदे देखे देखी, बहुत यहाँ मय मस्ताना,
तरह-तरह का आया मेरे, हाथों में था पैमाना;
एक- एक से बढकर दिलकश, साक़ी ने था प्यार किया,
नहीं लगा दिलकश आँखों को, पहले जैसा मयख़ाना।

(११०)

एक वक़्त था छलका करती, होठों पर मय मस्ताना,
एक वक़्त था झूमा करता, मेरे हाथ में पैमाना;
एक वक़्त था रिंद साक़ी को, उठा गोद में लेते थे,
आज बना शमशान भयानक, एक वक़्त था मयख़ाना।

(१११)

जला के दिल को भट्टी खींची, अश्क़ों की मय मस्ताना,
हर पल छलका करता जिससे, ये मिज़गाँ[१] का पैमाना;
आँखो से साकी के पीकर, रूख़सार[२] सुर्ख़[३] है हो जाते,
नहीं हिज्र का मारा मै हूँ, चलता फिरता मयख़ाना।

१ पलक २ गाल ३ लाल ४ जुदाई

(۱۱۲)

کتنی جلدی رنگ بدلتی ہے اپنی مئے مستانہ
کتنی جلدی لگا کھسکنے ہاتھ میں آکے پیمانہ
کتنی جلدی پیر مغاں کی کشش یہاں کم ہوجاتی ہے
صبح نہیں تھا ویسا جیسا شب میں لگا تھا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۱۳)

بوند بوند کو ترسائیگی کبھی تجھے مئے مستانہ
کبھی ہاتھ سے چھن جائیگا تیرا نشیلا پیمانہ
پینے والے پیرِ مغاں کی میٹھی باتوں سے بچنا
میری شان میں یوں ہی قصیدے پڑھتا تھا یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۱۴)

رُخ موڑا مذہب سے اپنے تب کہلایا مستانہ
صہبا چلی ہے پاؤں کو دھونے توڑا ہے جب پیمانہ
دیکھئے نازاں پیرِ مُغاں بھی پیچھے پیچھے پھرتا ہے
کیا وجہہ اب چھوڑ دیا ہے میں نے جانا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(११२)

कितनी जल्दी रंग बदलती, है अपनी मय मस्ताना,
कितनी जल्दी लगा खिसकने, हाथ में आके पैमाना;
कितनी जल्दी पीरोमुग़ाँ की, कशिश[१] यहाँ कम हो जाती है,
सुबाह नहीं था वैसा, जैसा, शब में लगा था मयख़ाना।

(११३)

बूंद - बूंद को तरसायेगी, कभी तुझे मय मस्ताना,
कभी हाथ से छिन जायेगा, तेरा नशीला पैमाना;
पीने वाले पीरेमुग़ाँ की, मीठी बातों से बचना,
मेरी शान में यूँ ही क़सीदे[२], पढता था ये मयखाना।

(११४)

रूख़ मोडा मज़हब से अपने, तब कहलाया मस्ताना,
सैहबा चली है पांव को धोने, तोड़ा है जब पैमाना;
देखीये नाज़ाँ[३] पीरोमुग़ाँ भी, पीछे पीछे फिरता है,
क्या वजह? अब छोड दिया है, मैने जाना मयख़ाना।

१ लगाव   २ तारीफ करना ३ घमंडी

(۱۱۵)

یہ نہ سمجھنا زہر پیا جب نہیں ملی مئے مستانہ
تب میں نے کشکول لیا جب لے سکتا تھا پیمانہ
جُھلسے دل کو چاہا جلانا گلے لگایا مرگھٹ کو
تب قدموں میں لوٹ رہا تھا میخانہ یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۱۶)

میخانے میں کتنی صہبا آئی اور گئی جانا
ہار یہاں پر پیمانوں کے کتنے ٹوٹ گئے مانا
کتنے ساقی میخانے میں کرکے کام تمام گئے
کتنے رند یہاں پر آئے پھر بھی وہی ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۱۷)

کتنے لبوں کو بھلا رکھیگی یاد یہاں مئے مستانہ
کتنے ہاتھوں کو رکھیگا یاد یہ پاگل پیمانہ
کتنے رندوں کی تصویریں پیرِ مُغاں رکھ سکتا ہے
کتنے میخواروں میں دیکھا ایک اکیلا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(११५)

यह न समझना ज़हर पिया, जब नहीं मिली मय मस्ताना,
तब मैने कशकोल लिया जब, ले सकता था पैमाना;
झुलसे दिल को चाहा जलाना, गले लगया मरघट को,
तब क़दमों में लोट रहा था, मयख़ाना ये मयख़ाना।

(११६)

मयख़ानो में कितनी सैहबा आई और गई जाना,
हार यहाँ पर पैमानों के, कितने टूट गये माना;
कितने साक़ी मयख़ाने में, [illegible] काम तमाम गये,
कितने रिंद यहाँ पर आये, फिर-भी वही है मयख़ाना।

(११७)

कितने लबों को भला रखेगी, याद यहाँ मय मस्ताना,
कितने हाथों को रखेगा, याद ये पागल पैमाना;
कितनें रिंदो की तस्वीरें, पीरेमुग़ाँ रख सकता है,
कितने मयख़ारों में देखा, एक अकेला मयख़ाना।

(۱۱۸)

دردر گھوم رہا تھا جب میں چلاّ تا مئے مستانہ
مجھے میکدہ نہیں ملا تھا نہیں ملا تھا پیمانہ
وصل ہوا پر لطف وصل کا نہیں لکھا تھا قسمت میں
میں اب ڈٹ کر بیٹھ گیا ہوں گھوم رہا ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(۱۱۹)

میخانے کے اندر میں ہوں ہاتھوں میں ہے پیمانہ
پیمانے میں میخانوں کو دکھلاتی مئے مستانہ
اسی کشا کش میں یہ میری دیکھو عُمر تمام ہوئی
میں میخانے کے اندر ہوں یا میرے اندر میخانہ

❖❖❖❖❖❖

(۱۲۰)

کسے نہ میخوری سے رشتہ کسے نہ بھائے پیمانہ
اس دنیا کے میخانے میں الگ الگ مئے مستانہ
جیسی تمنا ویسی پی کر سبھی یہاں پر رند بنے
ایک سبھی کا پیرِ مغاں ہے ایک سبھی کا میخانہ

(११८)

दर-दर घूम रहा था जब मैं, चिल्लाता मय मस्ताना,
मुझे मयकदा नहीं मिला था, नहीं मिला था पैमाना;
वस्ल हुआ पर लुत्फ़ वस्ल का, नहीं लिखा था क़िस्मत में,
मैं अब डट कर बैठ गया हूँ, घूम रहा है मयख़ाना।

(११९)

मयख़ाने के अंदर मैं हूँ, हाथों में है पैमाना,
पैमाने में मयख़ानो को, दिखलाती मय मस्ताना;
इसी कशाकश[१] में ये मेरी, देखो उम्र तमाम हुई,
मैं मयख़ाने के अन्दर हूँ या, मेरे अन्दर मयख़ाना।

(१२०)

किसे न मय ख़ोरी से रिश्ता, किसे न भाये पैमाना,
इस दुनियाँ के मयख़ाने में, अलग - अलग मय मस्ताना,
जैसी तमन्ना वैसी पीकर, सभी यहाँ पर रिंद बने,
एक सभी का पीरेमुग़ाँ है, एक सभी का मयख़ाना।

१) खिंचातानी

(۱۲۱)

میرے جگر کی آتش ٹھنڈی کر دے وہ مئے مستانہ
جس میں میرا عکس نمایاں ہر لمحہ وہ پیمانہ
میخانے وہ نہیں جہاں پر صہبا بیچی جاتی ہے
جہاں پہ تحفۂ مستی ملتا میرا ہے وہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۲۲)

رِندانا پن لے صہبا سے ترک کیا مئے مستانہ
پاگل پن لیکر ساغر سے میں نے چھوڑا پیمانہ
مل ساقی سے ساقی میں مل اپنی خودی کو کھو بیٹھا
مل میخانے کی مستی میں بھول گیا میں میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۲۳)

درِ میکدہ دستک دے تقدیر کا خالی پیمانہ
گہری سرد وہ آہیں بھر کے کہتا تھا ہر مستانہ
کتنی مختصر صہبا جوانی ہائے یہاں میں پی پایا
بند ہوگیا کتنی جلدی میری عُمر کا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(१२१)

मेरे जिगर की आतिश ठंडी, करदे वो मय मस्ताना,
जिसमें मेरा अक्स नुमायाँ, हर लमहाँ वो पैमाना;
मयख़ाने वो नही जहाँ पर, सहेबा बेची जाती है,
जहाँ पे तोहफा-ए-मस्ती मिलता, मेरा है वो मयख़ाना।

(१२२)

रिंदाऩापन[१] ले सैहबा से, तर्क किया मय मस्ताना,
पागलपन लेकर साग़र से, मैंने छोडा पैमाना;
मिल साक़ी से, साक़ी में मिल, अपनी ख़ुदी को खो बैठा,
मिल मयख़ाने की मस्ती में, भूल गया मैं मयख़ाना।

(१२३)

दरे मयकदा दस्तक दे, तक़दीर का ख़ाली पैमाना,
गहरी सर्द वो आहें भरक, कहता था हर मस्ताना;
कितनी मुख़्तसर सहेबा जवानी, हाय यहाँ मैं पी पाया,
बंद हो गया कितनी जल्दी, मेरी उम्र का मयख़ाना।

(۱۲۴)

کہاں گیا وہ ساقیٔ جنت کہاں گئی مئے مستانہ
خواب میکدہ کہاں کھوگیا سیم و زر کا پیمانہ
میخواروں نے قیمت صہبا جانی بھی تو کب جانی
پھوٹ چُکا جب ساغر صہبا ٹوٹ چُکا جب میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۲۵)

اپنے دور میں اپنی بہتری سمجھے سبھی مئے مستانہ
اپنے دور کا سب کو انوکھا لگتا اپنا پیمانہ
پوچھا بزرگوں سے جب میں نے مجھ کو یہی جواب ملا
اب نہ رہے میخوار وہ پہلے اب نہ رہا وہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۲۶)

میں نے خودی کو چھان چھان کر نام دیا مئے مستانہ
اپنی ہستی آپ مٹا کر اُس کا بنایا پیمانہ
کیوں نہ شیخ جی چونکے جھجکے قشقہ دھاری پنڈت جی
اپنا لی مدھو شالہ حالہ میں نے کر کے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

(१२४)

कहाँ गया वह साक़िये[१] जन्नत, कहाँ गई मय मस्ताना,
ख़्वाबे मयकदा कहाँ खो गया, सीमोज़र[२] का पैमाना;
मयख़्वारों ने क़ीमते सैहबा, जानी भी तो कब जानी,
फूट चुका जब साग़रे सैहबा, टूट चुका जब मयख़ाना।

(१२५)

अपने दौर में अपनी बेहतरी, समझे सभी मय मस्ताना,
अपने दौर का सबको अनोखा, लगता अपना पैमाना,
पूछा बुज़ुर्गों से जब मैने, मुझको यही जवाब मिला,
अब न रहे मयख़्वार वो पहले, अब न रहा वो मयख़ाना।

(१२६)

मैने ख़ुदी को छान छान कर नाम दिया मय मस्ताना,
अपनी हस्ती[३] आप मिटाकर उसका बनाया पैमाना;
क्यों न शेख़जी चौकें झिझके, कश्काधारी[४] पंडीतजी,
अपना ली ''मधुशाला'' ''हाला'' मैंने करके मयख़ाना।

१ जन्नतमे पिलाने वाला २ सोना चांदी ३ जिंदगी ४ तिलक धारी

(۱۲۷)

رَمز کئی بتلا دیتی ہے آکر کے مئے مستانہ
کتنے راز بتا جاتا ہے بار بار آ پیمانہ
ساقی بتلاجاتا مقصد کتنے اپنے اشاروں سے
پھر بھی میخواروں کے لیئے ہے ایک مُعمّہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۲۸)

جتنی دل کی گہرائی ہو اُتنا گہرا پیمانہ
کیف ہو دل میں اُتنی نشیلی ہوگی یہ مئے مستانہ
جذبات بھرے جتنے سینے میں اُتنا حسیں ساقی ہوگا
سُخن فہم جتنے ہیں رسیلے اُتنا رسیلا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۲۹)

جن ہونٹوں کو چھولے بنا دے رند میری مئے مستانہ
جس کے ہاتھ کو چھولے اُسکو وَحشی کردے پیمانہ
آنکھ ملی ہو جس کی میرے ساقی سے دیوانہ ہو
پاگل بن کر رقص کرے وہ جو بھی پہنچے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(१२७)

रम्ज़[१] कई बतला देती है, आकर के मय मस्ताना,
कितने राज़ बता-जाता है, बार-बार आ पैमाना;
साक़ी बतला जाता मक़सद, कितने अपने इशारों से,
फिर भी मयख़्वारों के लिये है, एक मुअम्मा मयख़ाना।

(१२८)

जितनी दिल की गहराई हो, उतना गहरा पैमाना,
कैफ़ हो दिल में उतनी नशिली, होगी ये मय मस्ताना;
जज़्बात भरें जितने सीने में, उतना हँसी साक़ी होगा,
सुख़नफ़हम[२] जितने है रसीले, उतना रसीला मयख़ाना।

(१२९)

जिन होठों को छू ले बना दे, रिंद मेरी मय मस्ताना,
जिसके हाथ को छू ले, उसको वहशी करदे पैमाना;
आँख मिली हो जिसकी मेरे, साक़ी से दीवाना हो,
पागल बनकर रक़्स करे वो, जो भी पहूँचे मयख़ाना।

१ रहस्य २ कविता सुनने वाला

(۱۳۰)

دیکھی جائیگی سبھی زباں پر یہ میری مئے مستانہ
پیرِ مُغاں کا میرے سبھی کے ہاتھ دکھیگا پیانہ
میرے مئے فروش کے چرچے ہوا کرینگے ہر گھر میں
ہر آنگن میں گونج اُٹھیگا میرا نشیلا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۳۱)

میری مئے میں دیکھی سبھی نے ہے اپنی مئے مستانہ
میرے ساغر میں دیکھا ہے اپنا اپنا پیانہ
پیرِ مُغاں میں میرے سبھی نے اپنا ساقی دیکھا ہے
جس کی جیسی پسند ہو اُسکو ویسا دکھا ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۳۲)

میخانے کے آنسو ہے یہ نہیں نہیں مئے مستانہ
میخانے کی آنکھیں ہیں یہ نہیں نہیں یہ پیمانہ
سُکوں بخش یادِ ماضی بھی ساقی بن کر جھُوم رہا
یہ شاعر کا نہیں تصور شبِ ہجر ہے میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(१३०)

देखी जायेगी सभी ज़ुबाँ पर, ये मेरी मय मस्ताना,
पीरेमुग़ाँ का मेरे सभी के, हाथ दिखेगा पैमाना;
मेरे मयफ़रोशी[१] के चर्चे, हुआ करेंगे हर घर में,
हर आंगन में गूँज उठेगा, मेरा नशीला मयख़ाना।

(१३१)

मेरी मय में देखी सभी ने, है अपनी मय मस्ताना,
मेरे सागर में देखा है, अपना अपना पैमाना;
पीरेमुग़ाँ में मेरे सभीने, अपना साक़ी देखा है,
जिसकी जैसी पसंद हो उसको, वैसा दिखा है मयख़ाना।

(१३२)

मय ख़ाने के आंसू है ये, नहीं नहीं मय मस्ताना,
मयख़ाने की आँखें है ये, नहीं नहीं ये पैमाना;
सुकूँ बख्श यादेमाज़ी भी, साक़ी बनकर झूम रहा,
ये शायर का नहीं तस्सवूर, शबे हिज्र है मयख़ाना।

(۱۳۳)

مٹا حسرتیں کتنی اپنی بنا سکا مئے مستانہ
خاک بنا کر کتنے ارماں بنا سکا میں پیمانہ
پینے والے پی جائینگے یہ بات نہ کوئی جانے گا
کتنے دل کے محل گرے تب کھڑا ہوا یہ میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۳۴)

زہر بھری دُنیا میں تیری آجائے مئے مستانہ
لُطف اگر لا پائے تھوڑا ساقی میرا انجانہ
تیرے ساکِت لمحوں کو گر شور بپا یہ کر ڈالے
کامیاب ہستی سمجھے گا دونوں جہاں میں میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(۱۳۵)

بڑے بڑے نازوں سے میں نے پالا ساقی مستانہ
فن و تصوّر کا ہی ہر دم جس نے اُٹھایا پیمانہ
لاڈ پیار سے ہر دم رکھنا میرے راج دُلارے کو
عالم تیرے ہاتھوں اپنا نظر ہے میرا میخانہ

❖❖❖❖❖❖❖

(१३३)

मिटा हसरतें कितनी अपनी, बना सका मय मस्ताना,
खाक बनाकर कितने अरमाँ, बना सका मैं पैमाना;
पीने वाले पी जायेंगे, ये बात न कोई जानेगा,
कितने दिल के महल गिरे तब, खडा हुआ ये मयखाना।

(१३४)

जहर भरी दुनिया में तेरी, आजाये मय मस्ताना,
लुत्फ[१] अगर ला पाये थोडा, साकी मेरा अनजाना;
तेरे साकीत लम्हों को गर, शोर[२] बपा ये कर डाले,
कामयाब हस्ती समझेगा, दोनों जहाँ में मयखाना।

(१३५)

बडे बडे नाजों से मैने, पाला साकी मस्ताना,
फनों[३] तसव्वूर का ही हरदम, जिसने उठाया पैमाना;
लाड प्यार से हरदम रखना, मेरे राज दुलारे को
आलम तेरे हाथों अपना, नजर है मेरा मयखाना।

१ मज़ा २ चिल्लापुकार ३ हुनर के खियाल